नमाज़ की महानता एवं महत्व

लेखक:

माजिद बिन सोलेमान अर्रसी

अनुवाद:

फैज़ुर रह़मान हिफज़ुर रह़मान तैमी

الترجمة الهندية لكتاب: الصلاة الصلاة!

لفضيلة الشيخ ماجد بن سليمان الرسي/ حفظه الله

بسم الله الرحمن الرحيم

ربِّ يسر وأعن

الحمد لله رب العالمين، والصلاة والسلام على أشرف الأنبياء والمرسلين، سيدنا محمد وعلى آله وأصحابه أجمعين، أما بعد

नमाज़ की महानता के दस प्रमाण:

1–शहादतैन के बाद नमाज़ ही वह प्रथम प्रार्थना है जिसे अल्लाह तआ़ाला ने वाजिब किया है,वह इस्लाम का द्वितीय स्तंभ है, अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर रज़ीअल्लाहु अंहुमा से वर्णित है उन्हों ने फरमाया:मैं ने रसूलुल्लाह सलल्लाहु अलैहि वसल्लम को फरमाते हुए सुना: "इस्लाम पाँच चीज़ों पर आधारित है:इस बात की गवाही देना कि अल्लाह के अतिरिक्त कोई सत्य परमेश्वर नहीं और यह कि मोह़म्मद सलल्लाहु अलैहि वसल्लम अल्लाह के रसूल हैं और नमाज़ पढ़ना,ज़कात देना, ह़ज करना और रमज़ान के रोज़े रखना"|[1]

1 इसे बोखारी(8)और मुस्लिम(16)ने रिवायत किया है और उपरोक्त शब्द मुस्लिम के हैं|

शहादतैन के बाद नमाज़ को यह स्थान देना इस बात का प्रमाण है कि (बंदा का)आस्था सही है,और उसके हृदय में शहादतैन का अर्थ जम चुका है जिसे वह(नमाज़ के द्वारा)सत्य सिद्ध कर रहा है|

2–पैगंबर सलल्लाहु अलैहि वसल्लम के हिजरत से पहले मक्का में तीन बेसते नबवी को नमाज़ उस समय फर्ज़ हुई जब इसरा व मेराज के अवसर पर आप सलल्लाहु अलैहि वसल्लम को आकाश पर ले जाया गया,अत: सातवें आकाश पे उपर अल्लाह ने अपने नबी मोहम्मद पर बिना किसी देवदूत के माध्यम के प्रत्यक्ष रूप में नमाज़ फर्ज़ किया, जबकि अन्य प्रार्थनाएं अप्रत्यक्ष रूप में फर्ज़ की गईं|

3–इस से पता चलता है कि नमाज़ हर वयस्क और स्वस्थ बुद्धि वाले मुसलमान पर फर्ज़ है,चाहे पुरूष हो या महिला|

4–इस्लाम में नमाज़ की जा स्थान प्राप्त है वह किसी अन्य प्रार्थना को नहीं,अत:नमाज़ इस्लाम धर्म का स्तंभ है जिस के बिना(उसका भवन खड़ा नहीं हो सकता),मोआ़ज़ बिन जबल रज़अल्लाहु अंहु से वर्णित ह़दीस में आया है,वह फरमाते हैं: रसूल सलल्लाहु अलैहि वसल्लम ने मोआ़ज़ से फरमाया: "क्या मैं तुम्हें धर्म मूल,उसका स्तंभ और उसकी चोटी न बतादूं"? मोआ़ज़ ने कहा:क्यों नहीं?अल्लाह के रसूल(अवश्य बताइय)आप सलल्लाहु

अलैहि वसल्लम ने फरमाया:धर्म का मूल इस्लाम है और उसका स्तंभ नमाज़ है और उसकी चोटी जिहाद है"|[2]

5–नमाज़ बंदा और उसके रब की बीच कानाफूसी का एक माध्यम है, क्यों कि इस में अल्लाह तआ़ला से प्रार्थना, उसकी प्रशंसा, क़ुरान का सस्वर पाठ,तस्बीह़ व तह़मीद, तक्बीर और शरीर के अंगों का विनम्रता एवं विनयशीलता भी शामिल है, जैसे रूकू व सजदा करना और अल्लाह के समक्ष विनम्रता एवं विनयशीलता, विनम्रता एवं नज़र को झुकाके खड़ा होना,शैख अ़ब्दुर्रह़मान बिन सादी रहिमहुल्लाहु ने अल्लाह के इस कथन की व्याख्या में फरमाया:﴿إِنَّ الصَّلَاةَ تَنْهَى عَنِ الْفَحْشَاء وَالْمُنكَرِ وَلَذِكْرُ اللَّهِ أَكْبَرُ﴾[العنكبوت:45]

अर्थात:वास्तव में नमाज़ रोकती है निर्लज्जा तथा दुराचार से और अल्लाह का स्मरण ही सर्व महान है|

नमाज़ में इस से भी बढ़ कर एक और महान एवं महत्वपूर्ण उद्देश्य छिपा हुआ है, वह यह है कि नमाज़ ह्रदय, जीभ और पूरे शरीर से अल्लाह का ज़िक्र करने का नाम है, क्यों कि अल्लाह तआ़ला ने बंदों को अपनी पूजा के लिये पैदा किया, और सर्वश्रेष्ठ प्रार्थना नमाज़ ही है,इसके अंदर शारीरिक अंगों की एतनी पार्थनाएं शामिल हैं जो अन्य प्रार्थनाओं में नहीं, इसी लिये अल्लाह ने फरमाया: (निसंदेह अल्लाह का जिक्र बहुत बड़ी चीज़ है)समाप्त

---

2 इस ह़दीस को तिरमिज़ी(2616) ने वर्णित किया है और कहा है कि: यह ह़दीस ह़सन सह़ी है|

6–नमाज़ के अंदर अनेक ऐसी विशेषताएं पाई जाती हैं जो अन्य प्राथनाओं में नहीं पाई जातीं,उन में से महत्वपूर्ण विशेषताएं ये हैं:

- **इसके लिए आवाज लगाई जाती है जिसे अज़ान कहा जाता है|**
- **इसे अदा करने के लिए तिहारत(पवित्रता)अनिवार्य है|**

7–यात्रा में एवं घर में,भय में व शांति में और स्वास्थ एवं रोग हर स्थिति में नमाज़ पढ़ना अनिवार्य है,केवल यह कि ऐसा रोग हो जिस के कारण बुद्धि जाती रहे|

8–नमाज़ की महानता एवं महत्व ही है कि आप सलल्लाहु अलैहि वसल्लम ने मरणसेज पर भी यह परामर्श किया कि नमाज़ का विशेष ध्यान रखा जाए,अत:उम्मे सल्मा रज़ीअल्लाहु अंहा से वर्णित है कि जिस रोग में आप सलल्लाहु अलैहि वसल्लम की मृत्यु हुई,उस समय आप फरमाया करत थे: "नमाज़(की रक्षा करो)और (उन दासी,दासों की)जो तुम्हारे अधीन आते हैं"आप ने इन शब्दों को बार बार दोहराया यहां तक कि आपकी ज़बान रुक गई|[3]

अह़मद की एक रिवायत में आया है:यहां तक कि अल्लाह के नबी सलल्लाहु अलैहि वसल्लम इन शब्दों को अपने ह्रदय में दोहराते रहे और आप की ज़बान से साफ साफ शब्द नहीं निकल रहे थे|

---

3 **इस ह़दीस को इब्ने माजा(1625)और अह़मद(6/290)ने रिवायत किया है और अल्बानी ने "الإرواء"(7/238)सह़ी कहा है|**

आपके फरमान: (जो तुम्हारे अधीन हैं)का अर्थ है:दासी एवं दास,जिन के साथ सुन्दर व्यवहार रखने की आप सलल्लाहु अलैहि वसल्लम ने परामर्श फरमाई|

ह़दीस में (ما يفيض بها لسانه) **के शब्द आए हैं(अर्थ:आपकी ज़बान रुक गई)अर्थ:उस वसीयत के अतिरिक्त आपकी ज़बान पर कोई और बात नहीं आ रही थी|जैसे कि हम कहते हैं:** استفاض على ألسنة الناس كذا وكذا **अर्थ:लोगों की ज़बान पे यह और यह बात प्रचलित हो गई, अन्य रिवायत में(**يُفيض**)के शब्द आए हैं,अर्थात:आप साफ साफ नहीं बोल सकते थे,** إفاضة **का अर्थ होता है स्पष्ट करना,इस प्रकार दोनों शब्द के अर्थ एक ही है, वह यह कि पैगंबर सलल्लाहु अलैहि वसल्लम नमाज़ की रक्षा और उसको पढ़ने की वसीयत फरमा रहे हैं यहां तक कि रोग के बढ़ने के कारण आप स्पष्ट रूप से बोल नही सक पा रहे थे|**

9–यह नमाज़ की महानता एवं महत्ता ही है कि क़्यातम के दिन सबसे पहले बंदा से जिस प्रार्थना के प्रति हिसाब लिया जाएगा वह नमाज़ होगी,अत:अबू होरैरा रज़ीअल्लाहु अंहु से वर्णित है कि रसूल सलल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया: "क़्यामत के दिन लोगों से जिस अ़मल के प्रति सबसे पहले हिसाब लिया जाएगा वह नमाज़ है, फरमाया:हमारा स्र्वश्रेष्ठ अल्लाह देवदूतों से फरमाएगा जबकि वह (पूर्व से ही)सब जानने वाला है:मेरे बन्दे की नमाज़ देखो!क्या उसने उसको पूरा किया है या उसमे

कोई कमी है?अत:वह यदि पूरी हुई तो पूरी की पूरी लिख दी जाएगी और यदि उसमें कोई कमी हुई तो फरमाएगा कि देखो!क्या मेरे बन्दे के कुछ नवाफिल भी है?यदि नवाफिल हुए तो वह फरमाएगा कि मेरे बन्दे के फर्ज़ों को उसके नफिलों से पूरा कर दो|फिर इसी प्रकार अन्य आ़माल लिए जाएंगे"|[4]

10–इसकी महानता एवं महत्ता का एक प्रमाण यह भी है कि अंत काल में इस्लाम धर्म का जो भाग सबसे अंतिम में(लोगों के अंदर से समाप्त हो जाएगा)वह नमाज़ होगी,यदि नमाज़ नष्ट हो गई तो पूरा धर्म जाता रहेगा और धर्म का कोई भाग(उसके अंदर)बाकी नहीं रहेगा,इसका प्रमाण आप सलल्लाहु अलैहि वसल्लम की यह ह़दीस है:इस्लाम के सार बंधन एक एक करके टूट जाएंगे, जब भी कोई बंधन टूटेगा, लोग उसके बाद लावे बंधन से चिमट जाएंगे,सबसे प्रथम टूटने वाला बंधन शासन है और सबसे अंतिम में टूटने वाला बंधन नमाज़ है|[5]

---

4 इस ह़दीस को अबू दाउूद(864)और अह़मद(2/425)ने रिवायत किया है और उपरोक्त शब्द अबूदाउूद के हैं,और अल्बानी रहिमहुल्लाहु और "المسند" के शोधकर्ताओं ने इसे सह़ी कहा है|

5इसे अह़मद(5/251)और इब्ने ह़िब्बान(6716)ने अबू अमाम बाहिली रज़ीअल्लाहु अंहु से वर्णन किया है और "المسند" के शोधकर्ताओं ने इसकी सनद को जिय्यद कहा है|

ह़दीस में (عرى الإسلام)**के शब्द आए हैं,इसका अर्थ है इस्लाम के फराएज़ व अह़काम व कानून,अर्थात लोग इन फराएज़ व अह़काम पर अ़मल करना छोड़ देंगे,जिस के फलस्वरूप धर्म की अजनबियत और बढ़ जाएगी यहां तक कि लोग नमाज़ से भी दूर हो जाएंगे, और सबसे अंतिम में नमाज़ ही छोड़ेंगे, जो कि अंतिम काल में होगा|**

अध्याय नमाज़ की अनिवार्यता का उल्लेख

- **अल्लाह का कथन है:** ﴿ إِنَّ الصَّلَاةَ كَانَتْ عَلَى الْمُؤْمِنِينَ كِتَابًا مَّوْقُوتًا ﴾ [6]

अर्थात:नि:संदेह नमाज़ ईमान वालों पर निर्धारित समय पर अनिवार्य की गई है|

आपका कथन: (सबसे पहले टूटने वाला बंधन शासन है)अर्थात:सबसे पहले जो बंधन टूटेगा वह यह कि शासन शैली एवं शासकों में बिगाड़ आजाएगी,मेरा कहना है:हमारे युग में हिंसा एवं बिगाड़ स्पष्ट है, अत:मुस्लिम देशों में जो शासन प्रणाली प्रचलित है वह मानव निर्मित हैं, बहुत कम ही देश हैं जहाँ इस्लामी शासन प्रणाली लागू है|

6 [النساء:103] , **इस आयत में :** ﴿مَّوْقُوتًا﴾ **का मतलब है:जो यहां पर फर्ज़ और अनिवार्य के अर्थ में है,इस से अल्लाह तआ़ला का यह कथन भी है:** ﴿يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا كُتِبَ عَلَيْكُمُ الصِّيَامُ كَمَا كُتِبَ عَلَى الَّذِينَ مِن قَبْلِكُمْ لَعَلَّكُمْ تَتَّقُونَ﴾ **इस आयत की व्याख्या में यह इब्ने अ़ब्बास रज़ीअल्लाहु अंहुमा का कथन है जैसा कि इब्ने जरीर अत्तबरी ने उनसे वर्णन किया है|**

- अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर रज़ीअल्लाहु अंहुमा से वर्णित है, उन्हों ने फरमाया : मैं ने सलल्लाहु अलैहि वसल्लम को फरमाते हुए सुना: "इस्लाम पाँच चीज़ों पर आधारित है:इस बात की गवाही देना कि अल्लाह के अतिरिक्त कोई सत्य परमेश्वर नहीं और यह कि ह़ज़रत मोह़म्मद सलल्लाहु अलैहि वसल्लम अल्लाह के रसूल हैं और नमाज़ पढ़ना,ज़कात देना, ह़ज करना और रमज़ान के रोज़े रखना"|[7]
- अनस बिन मालिक रज़ीअल्लाहु अंहु से वर्णित है, उन्हों ने कहा:रसूल सलल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया: "जो व्यक्ति हमारे जैसी नमाज़ पढ़े और हमारे क़िबले की ओर मँह करे और हमारा ज़बीहा(हमारे हाथ का ज़बह किया हुआ जानवर)खाए तो वह मुसलमान है जिसे अल्लाह और उसके रसूल का ज़िम्मा [8] प्राप्त है, अत:तुम अल्लाह के ज़िम्मो में ख्यानत(वादे का हनन)न करो"|[9]
- मोआ़ज़ रज़ीअल्लाहु अंहु से वर्णित है, वह फरमाते हैं:मुझे रसूल सलल्लाहु अलैहि वसल्लम ने दस बातों की वसीयत की, उन में से आप ने यह भी कहा: जान बूझ कर कोई फर्ज़ नमाज़ न छोड़ा

---

7 इसे बोखारी(8)और मुस्लिम(16)ने रिवायत किया है और उपरोक्त शब्द मुस्लिम के हैं, जैसा कि ऊपर गुजर चुका है|

8 ज़िम्मा का अर्थ रक्षा का वादा है, देखें:"المعجم الوسيط"

9 इसे बोखारी(391)ने वर्णित किया है|

करो,क्यों कि जो व्यक्ति जान बूझ कर कोई फर्ज़ नमाज़ छोड़ता है वह अल्लाह के ज़िम्म्ो(रक्षा)से निकल जाता है|[10]

अध्याय नमाज़ को पढ़ने,इसकी पाबंदी करने और इसमें सुस्ती करने से डरने का उल्लेख

- अल्लाह तआ़ला का कथन है:﴿حَافِظُوا عَلَى الصَّلَوَاتِ والصَّلَاةِ الْوُسْطَى﴾

अर्थात:नमाज़ों का, विशेष रूप से माध्यमिक नमाज़ का ध्यान रखो|

الصلاة الوسطى (बीच वाली नमाज़),का अर्थ अ़सर की नमाज़ है|

- अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र रज़ीअल्लाहु अंहुमा नबी सलल्लाहु अलैहि वसल्लम से वर्णन करते हैं कि आप ने एक दिन नमाज़ का उल्लेख किया तो फरमाया:जो व्यक्ति नमाज़ की रक्षा करता है उस के लिए वर क़्यामत के दिन नूर,(आलोक)प्रमाण और नजात होगी,और जो व्यक्ति इसकी रक्षा नहीं करता उसके लिए न नूर होगा,न

10 इसे अह़मद(5/238)ने वर्णित किया है और इसके शवाहिद के आधार पर अल्बानी ने इसे "إرواء الغليل" में इसे सह़ी कहा है|

बुरहान(प्रमाण)और न नजात, और वह क़्यामत के दिन क़ारून व फिरऔ़न और हारून और ओबैय बिन ख़ल्फ के साथ होगा|[11]

इब्नुल क़य्यिम रहीमहुल्लाहु[12]**फरमाते हैं:इन चार व्यक्तियों का उल्लेख विशेष रूप से इस लिए किया गया है कि ये सारे काफिरों के सरदार थे, इस में एक बारीक बिंदु भी है, वह यह कि जो व्यक्ति नमाज़ की रक्षा नहीं करता वह या तो धन एवं संपत्ति में व्यस्त रहता है,या अपने शासन में, या अपने राज्य व सरदारी में या अपनी व्यापार में व्यस्त रहता है, अत:जिस व्यक्ति को उसका धन नमाज़ से दूर एवं व्यस्त करदे वह क़ारून के साथ होगा, जिसे उसका शासन नमाज़ से व्यस्त करदे वह फिरऔ़न के साथ होगा,जिसे उसका राज्य व सरदारी–जैसे मंत्रालय अथवा इस जैसा**

---

11 **इसे अ़हमद(2/169)आदि ने रिवायत किया है और "المسند" के शोधकर्ताओं ने इसकी सनद को ह़सन कहा है|**

12 आप का नाम है: मुहम्मद पुत्र अबू बक्र पुत्र साद अल-ज़रई अल-दिमश्की, आप इब्ने क़ैय्यिम अल-जौज़ीय्या के नाम से प्रसिद्ध हैं, आप आठवीं शताब्दी के उलेमा में से हैं। आप अपने गुरू इब्ने तैमीय्या के सानिध्य में रहे यहाँ तक कि सन 728 हिजरी में उनका देहांत हो गया, आप उनके अति विशिष्ट शिष्य रहे हैं, और उनके देहांत के बाद आपने दावत एवं इल्मी जिहाद का बीड़ा उठाया यहाँ तक कि सन 751 हिजरी में आपकी मृत्यु हो गई, आप प्रकांड विद्वान तथा अकाट्य दलील पेश करने वाले एवं प्रमाणों से सूक्ष्मसेसूक्ष्मतम मसला समझने की क्षमता रखने वाले व्यक्तित्व के धनी एवं बहुतेरे पुस्तकों के लेखक हैं, आपकी पुस्तकों को लोगों ने हाथों हाथ लिया, और आपकी पुस्तकों को ऐसी स्वीकार्यता प्राप्त हुई कि आपके बाद आने वाले लोग मानो आपकी ही पुस्तकों पर आश्रित हैं, उन्होंने इस्लामी अक़ीदा को बड़े ज़ोरदार ढ़ंग से लोगों के समक्ष रखा व उसे फैलाया, और बिदअतियों (नवाचारियों) पर गद्य एवं पद्य दोनों रूप में प्रहार किया, विशेष रूप से दार्शनिकों (फलसफियों), क़ब्र पूजकों, तावील (शरई नुसूस व श्लोकों की मनमानी व्याख्या) करने वालों एवं सूफ़ियों पर कुठराघात किया, अल्लाह तआला की आप पर असीम कृपा हो, आपने तथा आपके गुरू ने अल्लाह के दीन को पूनर्जीवित करने का कार्य किया, संक्षेप में कहा जाए तो आप इस्लामी समुदाय में एक बड़े बदलाव का घोतक थे। आपकी जीवनी के बारे में अधिक जानकारी के लिए देखें: इब्न अल-इमाद की "शज़रात अल-ज़हब" तथा इब्ने रजब की "ज़ैल त़बक़ात अल-ह़नाबिलह", और आप की सबसे व्यापक एवं विस्तृत जीवनी लिखी है शैख़ बक्र बिन अब्दुल्लाह अबू ज़ैद रह़िमहुल्लाह ने एवं उनकी पुस्तक का नाम है "इब्ने क़ैय्यिम अल-जौज़ीय्या ह़यातुहू व आसा़रूहू"।

कोई अन्य पद–नमाज़ से दूर कर दे वर हामान के साथ होगा और जिसे उसका व्यापार नमाज़ से फेर दे वह ओबैय पुत्र खल्फ के साथ होगा|[13]

- **अ़ोबादह पुत्र सामित रज़ीअल्लाहु अंहु से वर्णित है, वर फरमाते हैं:मैं ने रसूल सलल्लाहु अलैहि वसल्लम को फरमाते हुए सुना: "पाँच नमाज़ें हैं जो अल्लाह तअ़ाला ने बंदों पर फर्ज़ की हैं,जो व्यक्ति उन्हें पढ़े, उनमें से किसी को कम महत्वपूर्ण समझ कर न छोड़दे**[14]**तो अल्लाह तअ़ाला के यहॉ उस के लिए वादा हो चुका है कि वह उसे स्वर्ग में प्रवेश प्रदान करेगा|और जो व्यक्तिा उन को न पढ़े तो अल्लाह तअ़ाला के यहॉ उस के लिए कोई वादा नहीं, चाहे उसे यातना दे, चाहे स्वर्ग में प्रवेश करे"|**[15]
- **अबू होरैरा रज़ीअल्लाहु अंहु से वर्णित है कि रसूल सलल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया: "क़यामत के दिन लोगों से जिस अ़मल का सबसे पहले हिसाब लिया जाएगा वर नमाज़ है, फरमाया:हमारा स्र्वश्रेष्ठ परवरदिगार देवदूतों से फरमाएगा जबकि वह(पूर्व से ही)सब जानने वाला है:मेरे बंदे की नमाज़ देखो!क्या उसने इसको पूरा किया है या इसमें कोई कमी है?अत:वह यदि पूरी हुई तो पूरी लिख दी**

---

13 "کتاب الصلاۃ وحکم تارکھا" **पृष्ठ संख्या**:70, **नमाज़ छोड़ने वाले को काफिर मानने वालों के प्रमाण के संदर्भ में इस कथन का उल्लेख है|**

14 **अर्थात उन नमाजों़ में से किसी को पूर्ण रूप से न छोड़े|**

15 **इस ह़दीस को अबू दाऊद(1420)और अह़मद(5/315)ने रिवायत किया है और अल्बानी और** "المسند" **के शोधकर्ताओं ने इसे सह़ी माना है|**

जाएगी और यदि इसमें कोई कमी हुई तो फरमाएगा कि देखो!क्या मेरे बंदे के कुछ नवाफिल भी हैं?यदि नवाफिल हुए तो वर फरमाएगा कि मेरे बंदे के फर्ज़ों को उसके नफलों से पूरा करदो|फिर इसी प्रकार से अन्य आ़माल लिए जाएंगे"|[16]

- नमाज़ के महत्व को देखते हुए ही नबी सलल्लाहु अलैहि वसल्लम ने मौत के रोग में भी इसकी वसीयत की, अत:उम्मे सल्मा रज़ीअल्लाहु अंहुमा से वर्णित है कि जिस रोग में आप सलल्लाहु अलैहि वसल्लम का निधन हुआ, उसमें आप फरमाया करते थे: "नमाज़(की रक्षा करो)और उन(दासी,दासों की)जो तुम्हारे अधीन हैं"|आप ने यह शब्द बार बार फरमाए यहाँ तक कि आप की ज़बान रुक गई|[17]

अध्याय नमाज़ क़ाएम करने के महत्व का उल्लेख

- नमाज़ स्र्वश्रेष्ठ अ़मल है, अत:सौ़बान रज़ीअल्लाहु अंहु से वर्णित है, अल्लाह के रसूल सलल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया: "सीधे मार्ग

16 इस ह़दीस को अबूदाऊद(864)और अह़मद(2/425)ने वर्णित किया है और उपरोक्त शब्द अबूदाऊद के हैं,और अल्बानी रह़िमहुल्लाहु और "المسند" के शोधकर्ताओं ने इसे सह़ी माना है, जैसा कि गुजर चुका है|

17 इस ह़दीस को इब्ने माजा(1625)और अह़मद (6/290)ने वर्णित किया है और अल्बानी ने "الإرواء" (7/238)में इसे सह़ी कहा है|

पर स्थिर रहो और तुम (पूर्ण रूप से)स्थिर नहीं रह सकोगे, और तुम्हें ज्ञात होना चाहिए कि तुम्हारा स्र्वश्रेष्ठ अ़मल नमाज़ है और वुज़ू की रक्षा मोमिन ही करता है"|[18]

- **नमाज़ स्वर्ग में प्रवेश होने का एक महान कारण है,क़ुरान पाक की अनेक आयतों में अल्लाह ने यह स्पष्ट कर दिया है कि स्वर्गवासी अपने जिन महत्वपूर्ण अ़मलों के कारण स्वर्ग के पात्र होंगे, उन में नमाज़ पढ़ना और ज़कात देना भी उल्लेखनीय हैं,उदाहरण स्वरूप अल्लाह तआ़ला का यह कथन देखें:**

﴿إِنَّ الَّذِينَ يَتْلُونَ كِتَابَ اللَّهِ وَأَقَامُوا الصَّلَاةَ وَأَنفَقُوا مِمَّا رَزَقْنَاهُمْ سِرًّا وَعَلَانِيَةً يَرْجُونَ تِجَارَةً لَّن تَبُورَ لِيُوَفِّيَهُمْ أُجُورَهُمْ وَيَزِيدَهُم مِّن فَضْلِهِ إِنَّهُ غَفُورٌ شَكُورٌ﴾[فاطر: 29–30]

अर्थात:वास्तव में जो पढ़ते हैं अल्लाह की पुस्तक(क़ुर्आन),तथा उन्होंने स्थापना की नमाज़ की, एवं दान किया उस में से जो हम ने उन्हें प्रदान किया है खुले तथा छुपे तो वही आशा रखते हैं ऐसे व्यापार की जो कदापि हानिकर नहीं होगा|ताकि अल्लाह प्रदान करे उन्हें भरपूर उन का प्रतिफल,तथा उन्हें अधिक दे अपने अनुग्रह से, वास्तव में वह अति क्षमी आदर करने वाला है|

---

18 **इस ह़दीस को इब्ने माजा(277)और अह़मर(5/277)ने वर्णित किया है और अल्बानी ने "الإرواء" में ह़दीस संख्या(412)के अंतर्गत सही़ कहा है, इसी प्रकार "المسند" के शोधकर्ताओं ने भी**
इसे सह़ी कहा है|

- **बकर पुत्र अबी मूसा अपने पिता से वर्णन करते हैं कि रसूल सलल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया: "जिसने दो ठंडे समय की नमाज़ों को(नियमित रूप से)अदा किया,वह स्वर्ग में प्रवेश करेगा"|[19]**

ठंडे समय का मतलब फजर और अ़सर की नमाज़ है,ऐसा नाम देने का कारण यह है कि इन दो नमाज़ों के समय ऋतु(सामान्य रूप से)ठंडा होता है|

- **नमाज़ की पाबंदी एवं रक्षा करना नरक में प्रवेश से रोकने वाले कार्यों में से है:अत:ज़ोहैर पुत्र अ़म्मारा अपने पिता रज़ीअल्लाहु अंहु से वर्णित करते हैं, उन्हों ने कहा:मैं ने रसूल सलल्लाहु अलैहि वसल्लम को फरमाते हुए सुना: "वह व्यक्ति कभी भी अग्नि में प्रवेश नहीं होगा जो सूर्य निकलने और उसके अस्त होने से पहले नमाज़ पढ़ता है"|[20]अर्थात फजर और अ़सर की नमाज़ें|**
- **नमाज़ पापों के क्षमा का माध्यम है,[21]अत:इब्ने मसऊ़द रज़ीअल्लाहु अन्हु से वर्णित है कि एक व्यक्ति ने किसी अजनबी**

19**इसे बोखारी(574)और मुस्लिम(635)ने वर्णित किया है|**

20 **सह़ी मुस्लिम(634)**

21 **अर्थात ऐसे पाप जिनका संबंध बंदा और उसके रब से है,जैसे शराब पीना अथवा अवैध गाना बजाना आदि, किन्तु वे पाप जिन का संबंध बंदों के अधिकार से है तो उसके क्षमा के लिए यह अनिवार्य है कि उससे क्षमा मांगी जाए,चाहे वह अधिकार धन से संबंधित हो अथवा मान व सम्मान से अथवा रक्त से|**

महिला का चुंबन लेलिया, उसके बाद वह रसूल सलल्लाहु अलैहि वसल्लम के सेवा में उपस्थित हुआ और अपना पाप बताया तो उस समय यह आयत उतरी:

﴿وَأَقِمِ الصَّلَاةَ طَرَفَيِ النَّهَارِ وَزُلَفًا مِّنَ اللَّيْلِ إِنَّ الْحَسَنَاتِ يُذْهِبْنَ السَّيِّئَاتِ ذَٰلِكَ ذِكْرَىٰ لِلذَّاكِرِينَ﴾ [هود:114]

अर्थात:तथा आप नमाज़ की स्थापना करें,दिन के सीरों पर और कुछ रात बीतने पर, वास्तव में सदाचार दुराचारों को दूर कर देते हैं यह एक शिक्षा है शिक्षा ग्रहण करने वालों के लिये|

उस व्यक्ति ने आप से पूछा:क्या ये केवल मेरे लिये है?आप ने फरमाया:नहीं, बल्कि मेरी उम्मत में से जो भी इस पर अ़मल करे यह सब के लिए है"|[22]

(पापों को दूर करती हैं):अर्थात:उन्हें मिटा देती हैं|

- **अबू होरैरा रज़ीअल्लाहु अंहु फरमाते हैं कि रसूल सलल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया :" पाँचों नमाज़ें और (हर) शुक्रवार (दूसरे) शुक्रवार तक बीच के काल के पापों का**

22 **इसे बोखारी(4687)और मुस्लिम(2763)ने रिवायत किया है और उपरोक्त शब्द बोखारी के हैं|**

कफ्फारा(उनको मिटाने वाले)हैं,जब तक कबीरा(बड़े)पापों को न किया जाए"|[23]

लाभ:विद्वानों ने इस ह़दीस से ज्ञान ज्ञात किया है कि पाँच समय की नमाज़ें और अन्य पुण्य के कार्य कबीरा पापों को नहीं मिटाते,बल्कि कबीरा पापों की माफी तौबा के बिना नहीं हो सकती|

- अबू होरैरा रज़ीअल्लाहु अंहु से मरवी है कि रसूल सलल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया: "तुम क्या समझते हो यदि तुम में से किसी के घर के सामने नहर हो जिससे वह हर दिन पाँच बार नहाता हो, क्या उस (के शरीर)का कोई कोई मैल कुचेल बाकी रहेगा,आप ने फरमाया यही पाँच नमाज़ों का उदाहरण है, अल्लाह तआ़ला उनके माध्यम से पापों को साफ कर देता है"|[24]
- फजर और अ़सर की नमाज़ें नियमित रुप से पढ़ने का सवाब यह है कि आखिरत में अल्लाह के दर्शन का सौभाग्य होगा जो कि सोवर्गवासियों के लिये सबसे बड़ा उपकार होगा,इसका प्रमाण जरीर बिन अ़ब्दुल्लाह बिजली रज़ीअल्लाहु अंहु की यह ह़दीस है,फरमाते हैं:हम एक रात नबी रसूल सलल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथ बैठे हुए थे|आपने चौध्वीं रात के चाँद

23 सह़ी मुस्लिम(233)

24 सह़ी मुस्लिम(667)

की ओर देखा तो फरमाया: "निसंदेह तुम अपने रब को देखोगे जिस प्रकार तुम इस चाँद को देख रहे हो,उसे देखने में तुम्हें कोई कठिनाई नहीं होगी,इस लिये यदि तुम्हारे लिए संभंव हो तो सूर्य उगने और सूर्य अस्त होने से पहले नमाज़ न छोड़ो"फिर आप ने यह आयत पढ़ी:

﴿وَسَبِّحْ بِحَمْدِ رَبِّكَ قَبْلَ طُلُوعِ الشَّمْسِ وَقَبْلَ الْغُرُوبِ﴾[ق:39]

अर्थात: तथा पवित्रता का वर्णन करें अपने पालनहार की प्रशंसा के साथ सूर्य के निकलने से पहले तथा डूबने से पहले|[25]

ह़दीस मे (لاتَضامُّون) का शब्द आया है जिस का अर्थ है:अल्लाह को देखते समय आपस में तुम्हारे बीच मुठभेड़ नहीं होगी|

(لاتُضامُون) تا के पेश और ميم के सुकून के साथ भी आया है,इसका अर्थ है:अल्लाह को देखते समय तुम्हारे ऊपर अन्याय नहीं होगा कि तुम में से कोई देखे और कोई न देखे|[26]

यह अर्थ भी हो सकता है कि अल्लाह को देखते हुए अल्लाह के नूर के कारण तुम्हारी आंखें नहीं चोंध्याएगी,क्यों कि मनुष्य अल्लाह के नूर को

---

25 **इसे बोखारी(4851)और मुस्लिम(633)ने वर्णित किया है और उपरोक्त शब्द बोखारी के हैं|**

26 **देखें:** النهاية،مادة:ضمم

झेल नहीं सकता,किन्तु आखिरत में मोमिनों को इतनी शक्ति प्रदान की जाएगी कि वर उस नूर को झेल सके,उसके बाद अल्लाह तआ़ला के दर्शन का सौभाग्य प्रदान होगा|

और सारे अर्थ सही हैं|

अध्याय निर्धारित समय पर नमाज़ अदा रकने की अनिवार्यता का बयान

- अल्लाह तआ़ला का कथन है: ﴿إِنَّ الصَّلَاةَ كَانَتْ عَلَى الْمُؤْمِنِينَ كِتَابًا مَّوْقُوتًا﴾

अर्थात:नि:संदेह नमाज़ ईमान वालों पर निर्धारित समय पर अनिवार्य की गई है|

इब्ने मस्ऊद रज़ीअल्लाहु अंहु का कथन है:नमाज़ का निर्धारित समय है जिस प्रकार ह़ज का निर्धारित समय है|[27]

- अबु अलमलीह़ फरमाते हैं:हम अबु आलूद दिन में ह़ज़रत बुरीदा रज़ीअल्लाह़ अंहु के साथ एक युद्ध में थे, उन्हों ने फरमाया:अ़सर की नमाज़ जल्दी पढ़ लो क्यों कि नबी सलल्लाहु अलैहि वसल्लम

27 इस कथन को इब्ने ह़जर अत्तबरी ने उपरोक्त आयत की व्याख्या में वर्णित किया है|

का कथन है: "जिस व्यक्ति ने अ़सर की नमाज़ छोड़ दी, उसका अ़मल नष्ट हो गया"|[28]

अध्याय निर्धारित समय पर नमाज़ पढ़ने के महत्व का उल्लेख

- निर्धारित समय पर नमाज़ पढ़ना स्र्वश्रेष्ठ कार्यों में से है, अत: अ़ब्दुल्लाह पुत्र मस्ऊ़द रज़ीअल्लाहु अन्हु फरमाते हैं:मैंने नबी सलल्लाहु अलैहि वसल्लम से पूछा:अल्लाह तआ़ला को कोनसा अ़मल सबसे अधिक पसंद है?आपने फरमाया: "नमाज़ को समय पर पढ़ना",उन्हों ने पूछा:फिर कोनसा?आपने फरमाया: "माता–पिता के साथ सुन्दर व्यवहार करना",उन्होंने पूछा: फिर कोनसा? आपने फरमाया: "अल्लाह के मार्ग में जिहाद करना", ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मस्ऊ़द रज़ीअल्लाहु अंहु कहते हैं:रसूल सलल्लाहु अलैहि वसल्लम ने मुझसे इसी प्रकार उल्लेख किया,यदि मैं और पूछता तो आप और कहते|[29]

अध्याय नमाज़ को उसके निर्धारित समय से विलम करने के कठोर निवारण का उल्लेख

28 इस ह़दीस को बोखारी(553)ने रिवायत किया है|

29 इस ह़दीस को बोखारी(5970)और मुस्लिम(85)ने वर्णित किया है और उपरोक्त शब्द बोखारी के है|

- **अल्लाह का कथन है:**

﴿فَوَيۡلٞ لِّلۡمُصَلِّينَالَّذِينَ هُمۡ عَن صَلَاتِهِمۡ سَاهُون﴾

अर्थात:विनाश है उन नमाज़ियों के लिये जो अपनी नमाज़ से अचेत हैं|

सअ़द पुत्र अबी वक्कास़ रज़ीअल्लाहु अंहु फरमाते हैं: (यह वे लोग हैं जो नमाज़ को उसके निर्धारित समय से विलम करते हु), यही कथन मसरूक़ बिन अलइजदा और अबू अलज़ोहा का भी है|[30]

- **मसअ़ब पुत्र अबी साद पुत्र अबी वक़्कास फरमाते हैं:मैंने अपने पिता से कहा:ए पिता जी!अल्लाह तआ़ला के इस कथन के विषय में आपकी क्या राय है?: ﴿فَوَيۡلٞ لِّلۡمُصَلِّين الَّذِينَ هُمۡ عَن صَلَاتِهِمۡ سَاهُون﴾ हम में से कोन है जिससे भूल चूक नहीं होती?हम में से कोन है जिसकी (नमाज़ में)विचार नहीं आते?उन्होंने फरमाया:इसका मतलब यह नहीं है, बक्कि इसका अर्थ है नमाज़ के निर्धारित समय को खराब करना वह इस प्रकार कि खेल कूद में मगन रहे यहां तक कि नमाज़ का समय निकल जाए|**[31]

---

30 **देखें:** تفسیر ابن کثیر، سورۃ الماعون

31 **इस असर को अबू याला(704)ने वर्णित किया है और इसकी सनद को मुनज़िरी ने** "الترغیب والترھیب"، کتاب الصلاۃ، باب الترھیب من ترک الصلاۃ متعمدا **में और अल्बानी ने** "صحیح الترغیب والترھیب" **(576)में ह़सन कहा है|**

- **इब्नुल क़य्यिम रह़िमहुल्लाहु इस आयत की व्याख्या में लिखते हैं:आयत में سہو का अर्थ नमाज़ छोड़ना है, यदि यह अर्थ न होता तो उन्हें नमाज़ी नहीं कहा जाता, बलिक इसका अर्थ नमाज़ की अनिवार्यता से लापरवाही करना है, या तो इसके निर्धारित समय से,जैसा कि इब्ने मस्ऊ़द आदि का कथन है, या विनम्रता व विनयशीलता से लापरवाही करना है|**

सही यह है कि इससे दोनों प्रकार की लापरवाही है, क्यों कि अल्लाह तआ़ला ने ऐसे लोगों के लिए नमाज़ पढ़ने का ज़िक्र तो किया है, साथ ही उनकी यह विशेषता बताई है कि वे इसमे लापरवाही करते हैं,जिसका अर्थ इसके अनिवार्य निर्धारित समय से लापरवाही करना,अथवा अनिवार्य सत्यनिष्ठा और अनिवार्य विनयशीलता से लापरवाही करना है|[32]

- **इब्ने ऊ़मर रज़ीअल्लाहु अंहुमा से वर्णित है कि रसूल सलल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया:जिस व्यक्ति की अ़सर की नमाज़ छूट गई, मानो उसके सारे संतान और धन लुट गए"|**[33]

---

32 **देखें**:"مدارج السالکین"،منزلۃ الخشوع"

33 **इसे बोखारी(552)और मुस्लिम(626)ने वर्णित किया है|**

(मानो उसके सारे संतान और धन लुट गए)अर्थात:वे सब छीन लिए गए और वह परिवार व संतान एवं धन से वंचित हो गया"|[34]

- अबूल अलमलीह़ फरमाते हैं:हम अबू आलूद दिन में ह़ज़रत बुरीदा रज़ीअल्लाहु अंहु के साथ एक युद्ध में थे, उन्होंने फरमाया:अ़सर की नमाज़ जल्दी पढ़लो क्यों कि रसूल सलल्लाहु अलैहि वसल्लम का फरमान है:"जिसने अ़सर की नमाज़ छोड़दी, उसका अ़मल नष्ट होगया"|[35]

---

34 एक व्यक्ति ने बयान किया कि वह एक बार अ़सर की नमाज़ के समय सो गया, तो सपने में देखा कि वह यात्रा में है और उसके पास एक नई कार है जिस में उसके परिवार भी सवार हैं,अत:वह किसी काम से कार से उतरा और उसी समय एक चोर ने वह कार परिवार समेत चोरी करली, उनका कहना है:फिर मेरी आँख खुल गई तो मैं ने उस सपने को इसी ह़दीस से व्याख्या किया|

- 35 इस ह़दीस को बोखारी ने वर्णित किया है|

  लाभ: यह ज्ञात है कि पूर्णता से आ़माल को नष्ट करने वाला कार्य केवल कुफ्र अकबर(बड़ा कुफ्र)है जो मनुष्य को इस्लाम से बाहर करदेता है, इसी आधार पर विद्वानों के एक समूह ने कहा है कि:जो व्यक्ति जान बूझ कर नमाज़ को उसके निर्धारित समय से विलंब करे वह कुफ्र का कार्य करता है,अल्लाह का शरण,इनका प्रमाण बुरीदा की उपरोक्त ह़दीस है, तथा यह ह़दीस भी उनका प्रमाण है कि: (हमारे बीच और उन(काफिरों)के बीच जो अनुबंध है, वह नमाज़ है, जिसने इसे छोड़ दिया उसने कुफ्र किया), इस ह़दीस में(हमारे बीच और उनके बीच)का अर्थ:मुसलमानों और काफिरों के बीच है, स्वोत्तम कथन के अनुसार वह काफिर हो या नहीं,यह तो तय है कि उसके आ़माल नष्ट हो जाते

- **सुमरा बिन जुनदुब रज़ीअल्लाहु अंहु से वर्णित है,उन्हों ने कहा:रसूल सलल्लाहु अलैहि वसल्लम बार–बार सह़ाबा से फरमाया करते थे: "क्या तुम में से किसी ने कोई सपना देखा है? "जिसने देखा होता वह अल्लाह की तौफीक़ से आपको बताता, आप सलल्लाहु अलैहि वसल्लम एक सुबह फरमाया:आज रात मेरे पास दो आने वाले आए, उन्हों ने मुझे उठाया और मुझसे कहा: (मेरे साथ)चलो, मैं उनके साथ चल दिया,अत:हम एक व्यक्ति के पास आए जो लेटा हुआ था और दूसरा व्यक्ति उसके पास एक पत्थर लिए खड़ा था, अचानक वह उसके सर पर पत्थर मारता तो उसका सर तोड़ देता और पत्थर लुढ़क कर दूर चला जाता, वर पत्थर के पीछे जाता और उसे उठा लाता,उसके वापस आने से पहले पहले दूसरे का सर सही हो जाता**

हैं,चाहे वह अपने ईमान पर स्थिर ही क्यों न रहे,जो कि मामूली बात नहीं है,इस लिए उन लोगों को अल्लाह से डरना चाहिए जो काम काज में व्यस्त रहते हैं और फजर की नमाज़ के लिए नहीं जगते, अधिकतर लोगों की आदत बन चुकी है कि वह ड्यूटी टाइम के अनुसार अलार्म लगाते हैं,जो कि सामान्य रूप से फजर की नमाज़ और सूर्य उगने के बाद का समय होता है,और जब नीन्द से उठते हैं तो फजर को क़ज़ा करते हैं, जबकि उसकी क़ज़ा सही होगी या नहीं यह विद्वानों के बीच विवाद का विषय है,واللہ المستعان۔

जैसा कि पहले था, खडा़ हुआ व्यक्ति फिर इसी प्रकार मारता और ऐसा ही होता जैसे पहले हुआ|

आप सलल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया:मैंने दोनों से कहा:!سبحان الله क्या बात है?यह दोनों व्यक्ति कोन हैं?

उन्हों ने कहा आगे चलो, आगे चलो|

ह़दीस के अंत में है कि उन दोनों देवदूतों ने रसूल सलल्लाहु अलैहि वसल्लम से उस व्यक्ति के बारे में और उसके पाप के बारे में बताया और फरमाया:वह प्रथम व्यक्ति जिसके पास आप गए थे और पत्थर से उसका सर कुचला जा रहा था,यह वह व्यक्ति है जो क़ुरान सीखता फिर उसे छोड़देता[36] और फर्ज़ नमाज़ पढ़े बिना सो जाता था|[37]

- अबू होरैरा रज़ीअल्लाहु अंहु से वर्णित है कि रसूल सलल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया: "जब मनुष्य रात(रात के समय)सो जाता है तो शैतान उसके मगज[38]पर तीन गिरहें लगादेता है, प्रत्येक गिरह पर यह फूंक देता है कि अभी तो बहुत रात बाकी है सोजाओ, फिर

---

36 अर्थात वह इसके प्रति लापरवाह था, अत:न इसके अह़काम सीखता और न इसके अनुसार अ़मल करता|

37 इस ह़दीस को बोखारी(7047)ने वर्णित किया है|

38 अर्थात उसके सर के पिछले भाग पर,इसका मलतब यह कि वह इतनी गहरी और लंबी नींद में चला जाता जाता है, मानो उसके सर पे तीन गिरह लगा दी गई हों,देखें:النهاية

यदि मनुष्य जाग गया हो और अल्लाह का स्मरण किया तो एक गिरह खुल जाती है, यदि उसने वज़ू कर लिया तो दूसरी गिरह भी खुल जाती है,उसके बाद अगर उसने नमाज़ नमाज़ पढ़ी तो तीसरी गिरह भी खुल जाती है,फिर सुबह को वह प्रसन्न लगता है,अन्यथा सुबह के समय उदास और थका हुआ जागता है"|[39]

- अ़ब्दुल्लाह बिन मस्ऊ़द रज़ीअल्लाहु अंहु से वर्णित है, उन्हों ने कहा कि पैगंबर रसूल सलल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास एक ऐसे व्यक्ति के विषय में बात की गई जो रात से ले कर सुबह तक सोया रहा, आप ने फरमाया: "यह ऐसा व्यक्ति है जिस के दोनों या एक कान में शैतान ने पैशाब कर दिया है"|[40]
- उ़मर पुत्र अ़ब्दुलअ़ज़ीज़ ने अपने वालियों(अर्थात अनेक नगरों के राज्यपालों)को लिख भेजा कि नमाज़ के समय व्यस्त रहने से बचो,क्यों कि जो व्यक्ति नमाज़ को नष्ट करदे, वह इस्लाम के अन्य अह़काम को अधिक नष्ट कर देता है|[41]

अध्याय जमाअ़त के साथ नमाज़ के महत्व का उल्लेख

---

39 इस ह़दीस को बोखारी(1142)और मुस्लिम(776)ने वर्णित किया है

40 इस ह़दीस को बोखारी(3270)और मुस्लिम(774)ने रिवायत किया है|

41 इस कथन को अबू नई़म ने "حلية الأولياء " (7351)में रिवायत किया है, प्रकाशक: دار الكتب العلمية , बैरूत

- **अबूहोरैरा रज़ीअल्लाहु अंहु से वर्णित है, उन्होंने कहा: रसूल सलल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया: "मनुष्य का मजाअ़त के साथ(सामूहिक रूप में)नमाज़ पढ़ना उसके अपने घर और अपने बाज़ार में नमाज़ पढ़ने से पचीस गुणा अधिक पूण्य का कारण है और यह इस प्रकार कि जब वह उत्तम रूप से वज़ू करके मस्जिद की ओर जाए और केवल नमाज़ के लिये चले तो जो पैर भी उठाएगा उसके बदले उसका एक स्थान उच्च होगा और एक पाप भी ख्तम होगा, फिर जब वह नमाज़ अदा करलेगा तो जब तक अपने नमाज़ के स्थान पे होगा,देवदूत उसके लिये दुआ़ करते रहेंगे कि हे अल्लाह! तू इस प्र क़पा व दया फरमा, और जब तक तुम में से कोई नमाज़ का प्रतिक्षा करता है तो वह मानो नमाज़ ही के अवस्था में होता है"|[42]**
- **अ़ब्दुल्लाह पुत्र मस्ऊ़द रज़ीअल्लाहु अंहु फरमाते हैं:जो यह चाहे कि कल(क़्यामत के दिन)अल्लाह तआ़ला से मुसलमान के रूप में मिले तो वह जहां से उन(नमाज़ों)के लिये बोलाया जाए,उन नमाज़ों को पूरी करे(वहां मस्जिद में जा कर सही ढंग से उन्हें अदा करे)क्योंकि अल्लाह तआ़ला ने मुम्हारे पैगंबर सलल्लाहु अलैहि वसल्लम के लिये हिदायत के मार्गों को निश्चय कर दिया है और यह (मस्जिदों में सामूहिक नमाज़ें)भी उन्हीं तरीकों में से हैं|क्योंकि यदि तुम नमाज़ें अपने घरों में पढ़ोंगे तो तुम, जैसे यह समूह से पीछे रहने वाला,**

---

42 **इस ह़दीस को बोखारी(647)और मुस्लिम(649)ने इसका एक टुकड़ा वर्णित किया है|**

अपने घर में पढ़ता है तो तुम अपने नबी के मार्ग को छोड़ दोगे और यदि तुम अपने नबी के मार्ग को छोड़ दोगे तो गुमराह हो जाओगे|कोई व्यक्ति जो पवित्रता प्राप्त करता है(वज़ू करता है)और अच्छे से वज़ू करता है, फिर इन मस्जिदों में से किसी एक में जाता है तो अल्लाह तआ़ला उसके प्रत्येक पग के बदले,जो वह उठाता है,एक नेकी लिखता है,और उसके कारण उसका एक स्थान उच्च कर देता है और उसका एक पाप मिटा देता है, और मैंने देखा कि हम में से कोई(भी)नमाज़ सामुहिक रूप से पढ़ने से पीछे न रहता था, सिवाए ऐसे मोनाफिक(पाखंडी)के जिसका निफाक(पाखंड)सबको मालूम होता(बल्कि कभी कभी ऐसा होता कि)एक व्यक्ति को इस प्रकार लाया जाता कि(दुर्बलता और निर्बलता के कारण)उसे दो व्यक्तियों के बीच सहारा दिया गया होता,फिर उसे सफ में खड़ा किया जाता|[43]

- मस्जिद में नमाज़ पढ़ने वाले व्यक्ति को क़्यामत के दिन अल्लाह तआ़ला अपने साये के नीचे स्थान देगा, जिस दिन सूर्य मनुष्य से एक मील की दूरी पर हागा,अत:अबूहोरैरह रज़ीअल्लाहु अंहु से वर्णित है वह पैगंबर सलल्लाहु अलैहि वसल्लम से बयान करते हैं कि आपने फरमाया:सात लोग ऐसे हैं जिन्हें अल्लाह तआ़ला क़्यामत के दिन अपने साये के नीचे स्थान प्रदान करेगा,उस दिन उसके साये[44] के

43 इस ह़दीस को मुस्लिम(654)ने रिवायत किया है|

44 इस ह़दीस को बैहक़ी ने अपनी पुस्तक (793)में अबूहोरैरा रज़ीअल्लाहु अंहु से इन शब्दों में रिवायत किया है:सात लोग ऐसे हैं जिन्हें अल्लाह तआ़ला क़्यामत के दिन

अतिरिक्त और कोई साया नहीं होगा,निष्पक्ष शासक,वह यूवा जो अल्लाह की पूजा करते हुए लपा बढ़ा हो, जिसने अकेले में अल्लाह को याद किया और उसकी आंखों से आंसू बह पड़े,वह व्यक्ति जिसका हृदय मस्जिद में लगा रहता है...الحديث

- मुस्लिम की एक वर्णन में आया है:वह व्यक्ति जब मस्जिद से निकलता है तो उसी के साथ मोअ़ल्क़(लटका हुआ)रहता है यहां तक कि उसमें लौट आए...الحديث ,[45]
- अबूहोरैरा रज़ीअल्लाहु अंहु पैगंबर सलल्लाहु अलैहि वसल्लम से रिवायत करते हैं कि आपने फरमाया: "जो व्यक्ति दिन के पहले भाग में या दिन के दूसरे भाग में मस्जिद की ओर गया अल्लाह तआ़ला(हर बार आने पर)उसके लिये स्वर्ग में (النُّزُل) सत्कार का प्रबंध फरमाता है, जब भी वह(आए)सुबह को आये अथवा शाम को आए"|[46]

अपने अ़र्श के साये के नीचे स्थान प्रदान करेगा,उस दिन उसके साये के अतिरिक्त और कोई साया नहीं होगा...الحديث, इस रिवायत को पुस्तक के शोधकर्ता अ़ब्दुल्लाह अलह़ाशदी ने सह़ी कहा है|

दोनों ह़दीसों के बीच कोई विरोधाभास नहीं है, क्यों कि उपरोक्त साये को अर्श की ओर भी मान्य है और अल्लाह की ओर भी मान्य है,स्वामित्व और सम्मान के अर्थ में|

45 इस ह़दीस को मुस्लिम(6806)और मुस्लिम(1031)ने रिवायत किया है|

46 इसे बोखारी(662)और मुस्लिम(669)ने वर्णित किया है और उपरोक्त शब्द मुस्लिम के हैं|

النُّزُل(सत्कार) का अर्थ वह स्थान है जो अतिथि के लिये तैयार किया जाता है|[47]

अध्याय प्रथम जमाअ़त जिस के लिये अज़ान दी जाती और इक़ामत कही जाती है,उसमें नमाज़ पढ़ने की अनिवार्यता और उससे पीछे रहने के निन्दा का व्याख्या

- प्रथम जमाअ़त के साथ नमाज़ पढ़ने की अनिवार्यता का एक प्रमाण यह है कि अल्लाह तआ़ला ने युद्ध के अवस्था में भी सामूहिक नमाज़ को अनिवार्य कर दिया है जो कि सबसे कठिन समय होता है, यह नमाज़ صلاة الخوف (भय वाली नमाज़)से जानी जाती है, अल्लाह तआ़ला का कथन है:

﴿وَإِذَا كُنتَ فِيهِمْ فَأَقَمْتَ لَهُمُ الصَّلَاةَ فَلْتَقُمْ طَائِفَةٌ مِّنْهُم مَّعَكَ﴾ الآية

अर्थात:तथा(हे नबी)जब आप (पणक्षेत्र में)उपस्थित हों,और उन के लिये नमाज़ की स्थापना करें तो उन का एक गिरोह आप के साथ खड़ा हो जाये|

- अल्लाह तआ़ला का कथन है:﴿وَأَقِيمُواْ الصَّلَاةَ وَآتُواْ الزَّكَاةَ وَارْكَعُواْ مَعَ الرَّاكِعِينَ﴾

47 देखें: "النهاية",इसी प्रकार देखें: इब्ने ह़जर की "فتح الباری" में उपरोक्त ह़दीस की व्याख्या|

अर्थात:तथा नमाज़ की स्थापना करो,और ज़कात दो तथा झुकने वालों के साथ झुको(रुकू करो)

इस आयत में रुकू करने वालों का अर्थ मस्जिद की जमाअ़त है|

- **अबूहोरैरह रज़ीअल्लाहु अंहु से वर्णित है कि सलल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया: "उस हस्ती का शपथ जिस के हाथ में मेरा प्राण है!मेरा इरादा हुआ कि मैं ईंधन इकट्ठा करनेका आदेश दूं,फिर मैं उन लोगों के पास जाऊं(जो समूह में शरीक नहीं होते)और उन्हें उनके घरों समेत जलादूं, शपथ है उस हस्ती की जिस के हाथ में मेरा प्राण है!तुम में से किसी को यदि आशा हो कि वहां मस्जिद में से मोटी हड्डी अथवा अच्छे पाए मिलेंगे तो वह अवश्य इशा में भी उपस्थित हो"|**

सह़ी मुस्लिम की रिवायत में है:फिर मैं कुछ लोगों को साथ लेकर,जिन के पास लकड़ियों के गट्ठे हों, उन लोगों की ओर जाऊं <u>जो नमाज़ में उपस्थित नहीं होते</u>,फिर उन्हें उनके घरों समेत जलादूं|[48]

- **इब्ने अ़ब्बास रज़ीअल्लाहु अंहुमा से वर्णित है कि नबी सलल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया: "जो व्यक्ति अज़ान सुन कर(नमाज़ के**

48 **इस ह़दीस को बोखारी(7224)और मुस्लिम(651)ने वर्णित किया है|**

लिये मस्जिम में)नहीं आता,उसकी कोई नमाज़ नहीं,सिवाए किसी असुविधा की स्थिति में."[49]

- अबूहोरैरह रज़ीअल्लाहु अंहु से वर्णित है,वह फरमाते हैं: नबी सलल्लाहु अलैहि वसल्लम के सेवा में एक अंधा आया और पूछा:ऐ अल्लाह के रसूल!मेरे पास कोई लाने वाला नहीं जो(हाथ से पकड़ कर)मुझे मस्जिद में ले आए,उसने नबी सलल्लाहु अलैहि वसल्लम से अनुरोध किया कि उसे अनुमति दी जाए कि वह अपने घर में नमाज़ पढ़ले,आपने उसे अनुमति देदी, जब वह वापस हुआ तो आप सलल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उसे बलाया और फरमाया: "क्या तुम नमाज़ का बोलावा(अज़ान)सुनते हो? "उसने कहा:जी हां,आपने फरमाया: "तो उस पर लब्बेक कहो|"[50]
- निष्कर्ष यह कि समूह में मस्जिद में नमाज़ अदा करना अनिवार्य है,हां कि कोई खेद हो जैसे भय,वर्षा,अथवा भीषण आंधी,समूह का अर्थ प्रर्थम जमाअ़त,जिस के लिये अज़ान दी जाती और इक़ामत कही जाती है,कुछ लोग प्रथम जमाअ़त से पीछे रह जाते हैं,अल्लाह उन्हें हिदायत दे,जिसके कारण हम देखते हैं कि नमाज़ी कई समूहों

---

49 इस ह़दीस को इब्ने माजा(793)आदि ने रिवायत किया है और अल्बानी ने "الإرواء" (2/337)में इसे सह़ी कहा है|

50 सही मुस्लिम(653)

में बट जाते हैं और कोई एक जमाअ़त नहीं रह पाती,अल्लाह ही हिदायत देने वाला है|[51]

अध्याय शुक्रवार की नमाज़ छोड़ने के निवारण का उल्लेख

- **इब्ने उ़मर और अबूहोरैरह रज़ीअल्लाहु अंहुमा से वर्णित है कि रसूल सलल्लाहु अलैहि वसल्लम ने मिंबर की सीढ़ियों पर खड़े हो कर फरमाया: "लोग जुमा की नमाज़ छोड़ने से रुक जाएं वरना अल्लाह तआ़ला उनके हृदयों पर मोहर लगा देगा और वह निश्चय रूप से ग़ाफिलों में से हो जाएंगे"|**[52]

जुमा की नमाज़ के लिये जल्दी जाने और प्रथम पंक्ति में बैठने के महत्व की व्याख्या

- **अबूहोरैरा रज़ीअल्लाहु अंहु से वर्णित है कि रसूल सलल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया: "पुरूषों की स्र्वोत्तम पंक्ति प्रथम और बदतर पंक्ति अंतिम पंक्ति है"|**[53]

---

51 **इस विषय पर अधिक ज्ञान के लिये देखें:**"أهمية الصلاة في ضوء النصوص وسير الصالحين" **लेखक:फज़ल इलाही ज़हीर, प्रकाशक:** مؤسسة الجريسي **–रियाज़**

52 **सह़ी मुस्लिम(865)**

53 **सह़ी मुस्लिम(440)**

- **अबूहोरैरह रज़ीअल्लाहु अंहु से वर्णित है कि रसूल सलल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया: "यदि तुम जानलो,अथवा लोग जानलें कि प्रथम पंक्ति का क्या (महत्व) है तो इसके लिये शलाका हो"|**[54]
- **अबूहोरैरह रज़ीअल्लाहु अंहु से वर्णित है कि सलल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया: "अगर लोगों को मालूम हो जाए कि अज़ान और प्रथम पंक्ति में किया पुण्य है,फिर वह अपने लिये मतदान करने के अतिरिक्त कोई उपाय न पाएं तो अवश्य मतदान करें|और लोगों को ज्ञात हो जाए कि ज़ोहर की नमाज़ के लिये जलदी आने का कितना पुण्य है तो अवश्य स्पर्था करेंगे|और अगर वह जान लें कि इशा और फजर की नमाज़ समूह में पढ़ने में कितना पुण्य है तो इन दोनों(की जमाअ़त)में अवश्य आएंगे यद्यपि उन्हें चूतड़ों के सहारे चल कर आना पड़े"|**[55]
- **बरा बिन आ़ज़िब रज़ीअल्लाहु अंहु फरमाते हैं कि सलल्लाहु अलैहि वसल्लम फरमाया करते थे: "अल्लाह तआ़ला प्रथम पंक्तियों में आने वालों पर कृपा नाज़िल करता है और देवदूत उनके लिये दुआ़एं करते हैं"|**[56]

---

54 **सहीं मुस्लिम(439)**

55 **सह़ी बोखारी(615)और सही़ मुस्लिम(437)**

56 **इस ह़दीस को अबूदाऊद (664)ने रिवायत किया है और अल्बानी ने इसे सही कहा है|**

इब्ने ह़िब्बान ने अपनी सह़ी में इन शब्दों के साथ यह ह़दीस रिवायत किया है : अल्लाह तआ़ला प्रथम पंक्ति (में आने वालों) पर रह़मत(कृपा)उतारता है और देवदूत उनके लिए दुआ़एं करते हैं|

- अ़रबाज़ पुत्र सारिया रज़ीअल्लाहु अंहु से वर्णित है कि सलल्लाहु अलैहि वसल्लम अगली पंक्ति वालों के लिये तीन बार क्षमा की दुआ़ फरमाते थे और दूसरी पंक्ति के लिये एक बार|[57]

निसाई में यह शब्द आए हैं:प्रथम पंक्ति वालों के लिये तीन बार दुआ़ फरमाते थे और दूसरी पंक्ति के लिये एक बार|

- अबूसई़द खुदरी रज़ीअल्लाहु अंहु से वर्णित है कि आप सलल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अपने (कुछ)सह़ाबा में यह बात देखी कि वे पीछे रहते हैं,आप सलल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया: "जो लोग पीछे रहने को आदत बना लेते हैं उन का अंताम यह होगा कि अल्लाह तआ़ला उन्हें पीछे करदेगा"|[58]

अर्थात अपने अपार कृपा,दया एवं उच्च स्थान से पीछे करदेगा|

---

57 इसे निसाई(816)और इब्ने माजा(996)ने रिवायत किया है और अल्बानी ने इसे सही कहा है|

58 सह़ी मुस्लिम(438)

- **आयशा रज़ीअल्लाहु अंहा से वर्णित है कि आप सलल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया:"जो लोग प्रथम पंक्ति से पीछे रहते(और इसे अपनी आदत बना लेते)हैं अल्लाह उन्हें भी पीछे करदेगा"|**[59]
- **इब्राहीम पुत्र यज़ीद नख़ई[60] फरमाते हैं:जिस व्यक्ति को तुम देखो कि वह तकबीरे ऊला(प्रथम तकबीर) को पकड़ने में सुस्ती करता है,उससे अपने हाथ धोलो|**[61]

अध्याय जो व्यक्ति पूर्णता से रुकू और सजदा ने करे उसके प्रति धमकी का उल्ल ेख

- **अबूहोरैरा रज़ीअल्लाहु अंहु से वर्णित है कि एक बार रसूल सलल्लाहु अलैहि वसल्लम मस्जिद में आए,एतने में एक व्यक्ति आया और उसने नमाज़ पढ़ी फिर उसने आप सलल्लाहु अलैहि वसल्लम को सलाम किया|आपने(सलाम का उत्तर देने के बाद)फरमाया:"वापस जाओ और नमाज़ पढ़ो तुमने नमाज़ नहीं पढ़ी"|वह व्यक्ति वापस**

---

59 **इस ह़दीस को अबूदाऊद (679)ने रिवायत किया है और अल्बानी रह़िमहुल्लाहु ने इसे सह़ी कहा है,चेतावनी:ह़दीस का अनुपूरक इस प्रकार है:"अल्लाह उन्हें नरक में भी पीछे करदेगा",किन्तु शैख अल्बानी ने इस अनुपूरक को ज़ईफ माना है,इस लिये मैंने इसका उल्लेख नहीं किया,देखें:"السلسلة الضعيفة" (6442)**

60**आप इमाम हा़फिज़ और फक़ीहुल इ़राक़ हैं,ह़दीस के वर्णनकर्ताओं में से हैं,आप का निधन सन 96 हिजरी में हुआ,आपकी जीवनी के लिये देखें: "سير أعلام النبلاء"(4/520)**

61 **इस कथन को हा़फिज़ अबू नईम अलअसबहानी ने "حلية الأولياء" (5489)में रिवायत किया है,शोध:मुस्त़फा अ़ब्दुलक़ादिर,प्रकाशक:دار الكتب العلمية–बैरूत**

गया और उसी प्रकार नमाज़ पढ़ी जिसे उसने(पहले)पढ़ी थी,फिर उसने आकर नबी सलल्लाहु अलैहि वसल्लम को सलाम किया,आपने(सलाम का उत्तर देने के बाद)फरमाया: "वापस जाओ और नमाज़ पढ़ो तुम ने नमाज़ नहीं पढ़ी",फिर इसी प्रकार तीनों बार हुआ अंत: उसने कहा:शपथ है उस अल्लाह की जिसने आपको सत्य के साथ भेजा है!मैं इससे अच्छी नमाज़ नहीं पढ़ सकता,अत:आप मुझे बता दीजिये|आपने फरमाया: "अच्छा जब तुम नमाज़ के लिये खड़े हो तो अल्लाहु अकबर कहो,फिर क़ुरान से जो तुम्हें याद हो पढ़ो,उसके बाद आराम से रुकू करो,फिर सर उठाओ और सीधे खड़े होजाओ,इसी प्रकार अपनी पूरी नमाज़ पूरी करो"|[62]

यह ह़दीस विद्वानों के बीच حدیث المسیء صلاتہ के नाम से प्रसिद्ध है,इस ह़दीस से ज्ञात होता है कि क़्याम और रुकू व सुजूद जैसे नमाज़ के समस्त अंगों को पूरा करने में स़तुष्टि एक स्तंभ का स्थान रखता है|

- जैद बिन वहब से वर्णित है,वह फरमाते हैं:हम होज़ैफा रज़ीअल्लाहु अंहु के साथ मस्जिद में बैठे थे कि एक व्यक्ति ابواب کندہ (द्वार का नाम) से प्रवेश किया और नमाज़ पढ़ने लग,किन्तु नमाज़ में रुकू व सुजूद पूर्णता से अदा नहीं किये,जब वह नमाज़ पढ़ चुके तो होज़ैफा रज़ीअल्लाहु अंहु ने पूछा:तुम कितने वर्ष से इस प्रकार नमाज़ पढ़

62सही बोखारी(757)और सह़ी मुस्लिम(397)

रहे हो?उसने उत्तर दिया:चालीस वर्षों से,ह़ोज़ैफा रज़ीअल्लाहु अंहु ने कहा:तुमने चालीस वर्षों से नमाज़ नहीं पढ़ी,यदि इसी प्रकार नमाज़ पढ़ते हुए तुम्हारा निधन होगया तो तुम इस फित़रत(प्रकृति) के अतिरिक्त(किसी और फित़रत फित़रत पर)मरोगे जिस पर मोह़म्मद सलल्लाहु अलैहि वसल्लम का जन्म हुआ था|[63]

- अ़ब्दुर रह़मान पुत्र शिब्ल रज़ीअल्लाहु अंहु से वर्णित है कि रसूल सलल्लाहु अलैहि वसल्लम ने तीन चीजों से मना फरमाया:कौव्वे के जैसा ठोंगे मारने से,दरिंदे के जेसे बांह बिछाने से और व्यक्ति नमाज़ के लिये एक ही स्थान निश्चित करले,जैसे ऊंट(बैठने के लिये)एक स्थान निश्चत करलेता है|[64]
- (कैव्वे के जैसे ठोंगें मारने से रोका),इसमें हलका सजदा करने और सजदे में असंतुष्टि से रोका है,यही कारण है कि विद्वानों ने धीरता को नमाज़ के स्तंभों में से एक स्तंभ माना है,जिसके बिना नमाज़ सही नहीं होती,और छोड़ देने से नमाज़ खराब होजाती है,आप

---

63 इस घटना का मोह़म्मद बिन नासिर मरवज़ी ने "تعظيم قدر الصلاة", अध्याय ذكر إكفار تارك الصلاة ,संख्या(940)में वर्णित किया है|

64 इस ह़दीस को इमाम निसाई(1111)और इब्ने माजा(1429)ने वर्णित किया है और अल्बानी रह़िमहुल्लाहु ने इसे ह़सन कहा है|

(दरिंदे के जैसे बांह फेलाने से मना किया)इसका अर्थ है कि सजदा की स्थिति में अपने बांह भूमि पर फैलादे,जबकि सह़ी तरीका यह है कि केवल हथेलियों को फैलाकर रखे और बाहों को भूमि से उठा रक रखे|

सलल्लाहु अलैहि वसल्लम पूरी तरह से रुकू और सजदा किया करते थे,अत:रुकू करते तो पूरी धीरता के साथ रुकू में रहते,सजदा करते तो पूरी धीरता से सजदा में रहते और मासूर दुआ़एं पढ़ते, इस लिये आप सलल्लाहु अलैहि वसल्लम का अनुगमन अनिवार्य है,पैगंबर सलल्लाहु अलैहि वसल्लम ने यह भी बताया है कि व्यक्ति की लंबी नमाज़ उसकी बौधिक्ता व अंतर्दृष्टि का प्रमाण है|[65]

- इब्नुल क़य्यिम रहि़महुल्लाहु फरमाते हैं:अल्लाह तआ़ला ने फरमाया: ﴿وَأَقِيمُواْ الصَّلَاةَ﴾

अर्थात:तथा नमाज़ की स्थापना करो|

अत:अल्लाह ने हमें नमाज़ पढ़ने का आदेश दिया,जिस का मतलब है इसे सह़ी और पूरे रूप में क़्याम,रुकू व सजूद और जिर्कों और दुआ़ओं के साथ अदा किया जाए,अल्लाह तआ़ला ने सफलता को नमाज़ में नमाज़ी के विनम्रता एवं विनयशीलता पर निर्भर माना हैख,अत:जिस व्यक्ति की नमाज़ में विनम्रता एवं विनयशीलता ने हो वह सफल लोगों में से नहीं है,यह असंभव है कि जल्द बाजी में ठोंगे मारते हुए जो नमाज़ पढ़ी जाए,उस में विनम्रता एवं विनयशीलता हो,बल्कि शांति के बिना विनम्रता एवं विनयशीलता का संकल्प ही नहीं किया जा सकता है,नमाज़ जितना शांतिपूर्ण होगी उतना ही उसमें विनम्रता एवं विनयशीलता भी होगा,और विनम्रता एवं विनयशीलता जितनी कम होगी उतना ही जल्दबाजी

65 सही़ मुस्लिम(869)

बढ़ेगी,यहां तक कि उसके शरीर की गति उस बेकार गति के जैसा होजएगी जिसमें न तो विनम्रता एवं विनयशीलता होता है,न बंदगी का भाव,और न बंदगी का ज्ञान|[66]

अध्याय नमाज़ छोड़ने वाले का हुकुम

शहादतैन के बाद इस्लाम का सबसे बड़ा स्तंभ नमाज़ ही है,जिस ने इसकी अनिवार्यता का इंकार करते ह़ुए इसे छोड़ दिया तो वह आम सहमति से काफिर है,और जो व्यक्ति सुस्ती में इसे छोड़दे,उसके प्रति प्राचीन काल एवं आधुनिक काल के विद्वानों दो पक्ष हैं,[67]**इब्नुल क़य्यिम रह़िमहुल्लाहु अपनी पुस्तक "کتاب الصلاۃ وحکم تارکھا" के आरंभ में लिखते हैं:**

इस विषय में मुसलमानों के बीच कोई तमभेद नहीं है कि जान बूझ कर फर्ज़ नमाज़ को छोड़ना स्र्वश्रेष्ठ पापों में से है,जिसका पाप अल्लाह के यहां हत्या,डाका डालना,बलातकार,चोरी और शराब पीन से बढ़ कर है,और ऐसा व्यक्ति दुनया एवं आखिरत में अल्लाह की यातना,उसकी नाराजगी और रुसवाई का पात्र होता है|समाप्त

- **सुस्ती में नमाज़ छोड़ने वाला काफिर है,इसका एक प्रमाण सूरह मरयम में अल्लाह तआ़ला का यह कथन है:**

---

66 "کتاب الصلاۃ وحکم تارکھا" **पृष्ट संख्या339-340 थोड़े हेरे-फेर के साथ**

67 **देखें:** شرح النووی لصحیح مسلم، کتاب الإیمان، مقدمۃ باب "بیان إطلاق اسم الکفر علی من ترک الصلاۃ"

﴿فَخَلَفَ مِن بَعْدِهِمْ خَلْفٌ أَضَاعُوا الصَّلاَةَ وَاتَّبَعُوا الشَّهَوَاتِ فَسَوْفَ يَلْقَوْنَ غَيًّا* إِلاَّ مَن تَابَ وَآمَنَ وَعَمِلَ صَالِحًا فَأُوْلَئِكَ يَدْخُلُونَ الْجَنَّةَ وَلاَ يُظْلَمُونَ شَيْئًا﴾

अर्थात:फिर इन के पश्चात ऐसे कपूत पैदा हुये,जिन्हों ने गँवा दिया नमाज़ को तथा अनुसरण किया मनोकांक्षावों का,तो वह शीघ्र ही कुपथ(के परिणाम)का सामना करेंगे|परन्तु जिन्होंने क्षमा माँग ली,तथा ईमान लाये और सदाचार किये तो वही स्वर्ग में प्रवेश पायेंगे और उन पर तनिक अत्याचार नहीं किया जाएगा|

तर्क यह है कि अल्लाह तआ़ला ने नमाज़ों को छोड़ने और मन की सुनने वालों के प्रति फरमाया:(सिवाए उनके जो तौबा करले और ईमान लेआएं),जो इस बात का प्रमाण है कि नमाज़ छोड़ने और मन की बात मानने की स्थिति में वह मोमिन नहीं थे|

- **अल्लाह का कथन है:**

﴿يَاأَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لاَ تُلْهِكُمْ أَمْوَالُكُمْ وَلاَ أَوْلاَدُكُمْ عَن ذِكْرِ اللَّهِ وَمَن يَفْعَلْ ذَلِكَ فَأُوْلَئِكَ هُمُ الْخَاسِرُونَ﴾

अर्थात:हे ईमान वालो!तुम्हें अचेत न करें तुम्हारे धन तथा तुम्हारी संतान अल्लाह के स्मरण से और जो ऐसा केरेंगे वही क्षति ग्रस्त हैं|

इब्नुल क़य्यिम रहि़महुल्लाहु इस आयत की व्याख्या में लिखते हैं:तर्क यह है कि इस आयत में पूर्णतया हानि का आदेश उस व्यक्ति पर लगाया जो अपने धन एवं संतान में व्यस्त होने के कारण नमाज़ से लापरवा हो गया

और पूर्णतया हानि केवल काफिरों के लिये होता है,और यदि मुसलमान को अपने पाप एवं नाफरमानी के कारण हानि हो जाए तो उसे आखिरत में लाभ मिल जाएगा|[68]

- **अल्लाह तआ़ला ने सूरह अलतौबा में मुशरिकों के विषय में फरमाया:**

﴿فَإِن تَابُواْ وَأَقَامُواْ الصَّلاَةَ وَآتَوُاْ الزَّكَاةَ فَإِخْوَانُكُمْ فِي الدِّينِ﴾

अर्थात:तो यदि वह (शिर्क से)तौबा कर लें और नमाज़ की स्थापना करें,और ज़कात दें तो तुम्हारे धर्म-बंधु हैं|

इब्नुल क़य्यिम रहिमहुल्लाहु फरमाते हैं:मोमिनों का भाईचारा केवल नमाज़ को पढ़ने के आधार पर है,जब वह नमाज़ न पढ़ेंगे तो वह मोमिनों के भीई न होंगे,क्योंकि वह मोमिन नहीं,क्योंकि अल्लाह का आदेश हैإنما المؤمنون إخوة **समस्त मोमिन आपस में भीई हैं|**[69]

नमाज़ छोड़ने वाले के काफिर होने का प्रमाण ह़दीसों में बहुत आई है,जिनमें से कुछ ये हैं:

---

68 كتاب الصلاة **" पृष्ठ संख्या 60 नमाज़ छोड़ने वाले को काफिर मानने वालों के प्रमाणों के अध्याय में**

69 **उपरोक्त संदर्भ पृष्ट संख्या 59**

- **बरीदह बनि अलह़सीब रज़ीअल्लाहु अंहु से वर्णित है,रसूल सलल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया:"हमारे और उन(काफिरों)के बीच अंतर नमाज़ से है,जिसने इसे छोड़ दिया उसने कुफ्र किया"|**[70]
- **जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह रज़ीअल्लाहु अंहुमा ने फरमाया कि मैं ने रसूल सलल्लाहु अलैहि वसल्लम को यह फरमाते हुए सुना:"नि:संदेह मनुष्य और शिर्क व कुफ्र के मध्य(अंतर मिटाने वाला कार्य)नमाज़ का छोड़ना है"|**[71]
- **सौबान रज़ीअल्लहु अंहु से वर्णित है कि मैंने रसूल सलल्लाहु अलैहि वसल्लम को फरमाते हुए सुना:बंदा व ईमान व कुफ्र के बीच(फैसला**

---

70 **इस ह़दीस को तिरमिज़ी (2621) ,निसाई (462) ,इब्नेमाजा (1079) ,इब्ने ह़िब्बान(1454),अह़मद(5/346)और लालकाई ने** "شرح اصول اعتقاد اهل السنة" **(1520)में अध्याय** الصلاة من الإيمان **में रिवायत किया है,अल्बानी ने इब्ने अबी शैबा की पुस्तक** "الإيمان" (46)**टिप्पणी में लिखा है कि इसकी सनद मुस्लिम की शर्त पर सह़ी है,और इब्नुल क़य्यिम ने भी** "كتاب الصلاة" **के अंदर यही हुकुम लिखा है,देखें:नमाज़ छोडंने वालों को काफिर मानने वालों के प्रमाण का संदर्भ,पृष्ठ संख्या 48,तथा इब्ने तैमिया ने भी** "مجموع الفتاوى" (7/513)**में इस ह़दीस को सह़ी कहा है|**

71 **इस ह़दीस को इमाम मुस्लिम(82)ने रिवायत किया है,और इनके अतिरिक्त मोह़द्देसीन ने भी लगभग उपरोक्त शब्दों के साथ ही इस ह़दीस को रिवायत किया है,जैसे अबूदाऊद (4678) ,तिरमिज़ी (2618-2620) ,निसाई (463) ,इब्ने माजा(1078),अह़मद(3/370)और लालकाई ने** "شرح أصول اعتقاد أهل السنة" (1513-1517)**में अध्याय** الصلاة من الإيمان **के अंतर्गत रिवायत किया है,देखें:**"صحيح الترغيب والترهيب" (563)|

करने वाली चीज)नमाज़ है,जिसने नमाज़ छोड़ दिया उसने शिर्क किया|[72]

- **जहां तक सह़ाबा के फत्वों की बात है तो जुमहूर(अधिकांश)सह़ाबा नमाज़ छोड़ने वाले को काफिर मानते हैं,बल्कि <u>कई विद्वानों ने नमाज़ छोड़ने वाले के काफिर होने पर सह़ाबा की आम सहमती बतलाई है</u> जैसा कि आरहा है,उदाहरण स्वरूप उ़मर पुत्र खत्ताब रज़ीअल्लाहु अंहु ने मौत के रोग में फरमाया:नमाज़ छोड़ने वाले का इस्लाम में कोई भाग नहीं है|**[73]
- **शोरैक ने अ़ब्दुल मलिक बिन अ़ोमैर से और उन्होंने अबूल मलीह़ से वर्णित किया है,वह फरमाते हैं:मैंने उ़मर रज़ीअल्लाहु अंहु को फरमाते हुए सुना:नमाज़ छोड़ने वाले का कोई इस्लाम नहीं,शोरैक से पूछा गया:क्या मिंबर पर उन्होंने ऐसा कहा?उन्होंने कहा:जी हां|**[74]

---

72 **इस ह़दीस को लालकानी ने** "شرح أصول اعتقاد أهل السنة" **में रिवायत किया है और फरमाया कि:इसकी सनद मुस्लिम की शर्त पर सह़ी है,और अल्बानी ने** "صحيح الترغيب والترهيب" **(566)में इसका उल्लेख किया है|**

73 **इसे मालिक ने** "الموطأ" **के अंदर** كتاب الطهارة ، باب العمل فيمن عليه الدم من جرح أو رعاف **में,लालकाई(1528-1528)ने और मरवज़ी ने** "تعظيم قدر الصلاة" **के अंदर (390)में रिवायत किया है|**

74 **मरवज़ी ने इसे** "تعظيم قدر الصلاة" **में** باب إكفار تارك الصلاة **(930)के अंतर्गत रिवायत किया है|**

- **अ़ली बिन अबी त़ालिब रज़ीअल्लाहु अंहु से बेनमाज़ी महिला के विषय में पूछा गया तो उन्होंने फरमाया:जो व्यक्ति नमाज़ न पढ़े वह काफिर है|**
- **आपने और फरमाया:जिस व्यक्तिा ने जानबूझ कर एक समय की नमाज़ छोड़ दी,वह अल्लाह से बरी(मुक्त)है और अल्लाह उससे मुक्त है|**[75]
- **जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह रज़ीअल्लाहु अंहुमा से पूछा गया:क्या आप(सह़ाबा)अपने बीच पाप करने को कुफ्र मानते हैं?तो उन्होंने कहा:नहीं,बंदा और कुफ्र के बीच दूरी खत्म करने वाली चीज नमाज़ का छोड़ना है|**[76]
- **आपसे अधिक पूछा गया:रसूलूल्लाह सलल्लाहु अलैहि वसल्लम के युग में आप(सह़ाबा)के नजदीक कौनसा अ़मल कुफ्र और ईमान के बीच अंतर करता था?तो आपने फरमाया:नमाज़|**[77]
- **इब्ने मस्ऊ़द रज़ीअल्लाहु अंहु नमाज़ के विषय में फरमाते हैं:हमारी राय है कि नमाज़ न छोड़ी जाए क्योंकि नमाज़ छोड़ना कुफ्र है|**[78]

---

75 **इस कथन को और इससे पूर्व के कथन को मरवज़ी ने "تعظیم قدر الصلاۃ" में** باب ذکر اِکفار تارک الصلاۃ **(933,934)के अंर्तगत रिवायत किया है|**

76 **इसे लालकाई (1537)और मरवज़ी ने में के अंतर्गत वर्णित किया है|**

77 **इसे लालकाई (1537)और मरवज़ी ने में के अंतर्गत वर्णित किया है|**

78 **इसे लालकाई(1532) ने रिवायत किया है|**

- **आपने अधिक फरमाया:जो व्यक्ति नमाज़ नहीं पढ़ता उसका दीन से कोई संबंध नहीं|**[79]
- **अबू दरदा रज़ीअल्लाहु अंहु फरमाते हैं:जो व्यक्ति नमाज़ नहीं पढ़ता उसके अंदर ईमान नहीं और जिसका वुज़ू न हो उसकी नमाज़ नहीं|**[80]
- **अ़ब्दुल्लाह बिन शक़ीक़ जो कि महान ताबई़ हैं,वह फरमाते हैं:मोह़म्मद सलल्लाहु अलैहि वसल्लम के सह़ाबा किसी भी अ़मल के छोड़ने को कुफ्र नहीं मानते थे सिवाए नमाज़ के|**[81]
- **जहां तक नमाज़ छोड़ने वाले के काफिर होने के विषय में ताबई़न के फत्वों की बात है तो ईमाम लालकाई रह़िमहुल्लाहु ने** "شرح أصول اعتقاد أهل السنة والجماعة" **में लिखा है:**

(ह़सन से वर्णित है कि:मुझे पहुंचा है कि रसूलुल्लह सलल्लाहु अलैहि वसल्लम के सह़ाबा कहा करते थे:बंदा और शिर्क के बीच ऐसा अंतर जिसके

---

79 **मरवज़ी ने इसे** "تعظيم قدر الصلاة" **में** باب إكفار تارك الصلاة **(936)के अंतर्गत रिवायत किया है और इब्ने अबी शैबा ने** "كتاب"الإيمان **(48)में रिवायत किया है और अल्बानी ने** "صحيح الترغيب والترهيب" **(574)में इसकी सनद को ह़सन कहा है|**

80 **इसे लालकाई(1536)और इब्ने नसर मरवज़ी ने** "تعظيم قدر الصلاة" **में अध्याय** ذكر إكفار تارك الصلاة **(945)के अंतर्गत रिवायत किया है किंतु उनके वर्णन में अंतिम वाक्य नहीं है और अल्बानी ने** "صحيح الترغيب والترهيب" **(575)में इसकी सनद को सह़ी कहा है|**

81 **इसे इमाम तिरमिज़ी(2622)और मरवज़ी ने** "تعظيم قدر الصلاة" **में** باب ذكر إكفار تارك الصلاة **(948) के अंतर्गत रिवायत किया है और अल्बानी ने** "صحيح الجامع" **में इसे सह़ी कहा है,अधिक देखें:उनकी टिप्पणी:** "صحيح الترغيب والترهيب"**(565)**

कारण बंदा काफिर होजाता है,यह है कि बिना किसी वैध बहाने के नमाज़ छोड़दे|

ताबईन में ऐसी राय रखने वाले:मोजाहिद,सईद बिन जोबैर,जाबिर बिन ज़ैद,अम्र बिन दीनार,इब्राहीम बिन नख्ई और अलक़ासिम बिन मुख़ीरा हैं|

जबकि फोक़ीहों में से:मालिक,औज़ाई,शाफई,शोरैक बिन अब्दुल्लाह नखई,अहमद,इस्हाक़,अबूसौर और अबू ओबैद अलक़ासिम बिन सलाम भी इसी के पक्ष में हैं| [82]

- **इस्हाक़ बिन राहवैह का कथन है:रसूलुल्लाह सलल्लाहु अलैहि वसल्लम से सिद्ध है कि नमाज़ छोड़ने वाला काफिर है,यही राय आप सलल्लाहु अलैहि वसल्लम के युग से लेकर आज तक के विद्वानों की भी है कि जो व्यक्ति जानबूझ कर बिना किसी वैध बहाने के नमाज़ छोड़ता है यहां तक कि उसका समय निकल जाता है,तो वह काफिर है|**[83]

---

82 "شرح أصول اعتقاد أهل السنة والجماعة" **(1502),और देखें:(1539)**

83 **इस कथन को मोहम्मद बिन नसर मरवज़ी ने** "تعظيم قدر الصلاة" **अध्याय** ذكر النهي عن قتل المصلين **(990)में और इब्ने अब्दुलबर ने** "التمهيد" **,खंड** صلاة الجماعة**,अध्याय** إعادة الصلاة مع الإمام **में रिवायत किया है,तथा यह वृद्धि भी किया है कि:यदि उस क़ज़ा(बाद में अदा करने)करने से इंकार करे और कहे कि:मैं नमाज़ नहीं पढ़ूंगा|**

- **सईद बिन जोबैर फरमाते हैं:जिसने जानबूझ कर नमाज़ छोड़ा उसने कुफ्र किया|**[84]
- **अय्यूब अलसख्तयानी ने फरमाया:नमाज़ को छोड़ना कुफ्र है,इसमें कोई मतभेद नहीं|**
- **अ़ब्दुल्लाह बिन मोबारक फरमाते हैं:जिसने जानबूझ कर बिना किसी वैध बहाने के नमाज़ को विलंब किया यहां तक कि उसका समय निकल गया तो उसने कुफ्र किया|**[85]
- **ह़ाफिज़ अ़ब्दुल अ़ज़ीम मुनज़री ने फरमाया:सह़ाबा के एक समूह और उनके पश्चात के एक समूह भी इस पक्ष में हैं कि जो व्यक्ति जानबूझ कर नमाज़ छोड़दे यहां तक कि उसका पूरा समय निकल जाए तो वह काफिर है,उनमें उ़मर बिन खत्ताब,अ़ब्दुल्लाह बिन मस्ऊ़द,अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास,मोआ़ज़ बिन जबल,जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह और अबू दरदा रज़ीअल्लाहु अंहुम उल्लेखनीय हैं|सह़ाबा के अतिरिक्त अह़मद बिन ह़ंबल,इस्ह़ाक़ बिन राहवैह,अ़ब्दुल्लाह बिन मोबारक,नखई,ह़कम बिन अ़ोतैबा,अय्यूब अलसख्तियानी,अबूदाऊद**

---

84 **इसे मरवज़ी ने** "تعظيم قدر الصلاة" **,अध्याय** ذكر إكفار تارك الصلاة **(919)में वर्णित किया है**

85 **इस वर्णन को और इससे पूर्व के वर्णन को मरवज़ी ने** "تعظيم قدر الصلاة"**, अध्याय** النهي عن قتل المصلين **(978-979)में वर्णित किया है|**

अल्तयालसी,अबूबकर बिन अबी शैबा और ज़ोहैर बिन ह़र्ब आदि रह़िमहुमुल्लाहु भी इसके पक्ष में हैं|[86]

- इब्ने ह़ज़म रह़िमहुल्लाहु फरमाते हैं:उ़मर,मोआ़ज़,अ़ब्दुर रह़मान बिन औ़फ और अबूहोरैरह आदि रज़ीअल्लाह़ अंहुम से वर्णित है कि जो व्यक्ति जानबूझ कर कोई फर्ज़ नमाज़ छोड़दे यहां तक कि उसका समय निकल जाए तो वह काफिर और मुर्तद(धर्म त्यागी) है|[87]
- मोह़म्मद बिन नसर मरवज़ी[88] फरमाते हैं:यह जमहूर(बहुसंख्यक विद्वानों) अहले ह़दीस का कथन है|[89]
- इब्नुल क़य्यिम रह़िमहुल्लाहु फरमाते हैं:जो व्यक्ति अल्लाह के आदेश को मानता है तो वह नमाज़ छोड़ने पर क्यों जिद करता है,जबकि उसे ज्ञान है कि अल्लाह तआ़ला ने नमाज़ पढ़ने का आदेश दिया है और यह बात स्वभाविक रूप से एवं आदतन असंभव है कि एव व्यक्ति दिन और रात की पाँच नमाज़ों को इलाही फर्ज़ भी मानता हो और फिर उन्हें छोड़ भी दे और फिर उसे छोड़े हुए नमाज़ की यातना का भी पूरा पूरा ज्ञान हो और फिर वह नमाज़ को छोड़दे,यह बहुत ही कठिन है,जो व्यक्ति नमाज़ को फर्ज़ जानाता है

---

86 "الترغيب والترهيب"، كتاب الصلاة، ختام باب الترهيب من ترك الصلاة متعمدا.

87 इब्ने ह़ज़म की "المحلى" (1/152-153) مسئلہ (279)

88आप इमाम,शैखुलइस्लाम,ह़ाफिज़ और शाफिई़ फक़ीह हैं,आपका निधन सन 294 हिजरी में हुआ,आपकी जीवनी के लिये देखें:"سير أعلام النبلاء" (4/33)

89 "تعظيم قدر الصلاة، باب ذكر النهي عن قتل المسلمين وإباحة قتل من لم يصل, अ़सर संख्या(1002)के पश्चात

वह इसे कभी भी छोड़ नहीं सकता,क्योंकि ईमान मनुष्य को नमाज़ स्थापित करने का आदेश देता है और <u>यदि उसका हृदय नमाज़ पर प्रोत्साहित नहीं करता तो वह बिल्कुल ईमान से वंचित है</u>|[90]

- **मुसलमानों के इमाम पर अनिवार्य है कि नमाज़ छोड़ने से तौबा कराए,यदि वह तौबा करले तो छोड़दे,अन्यथा उसके कुर्फ का पक्ष मानने वालों के अनुसार उसे मुर्तद(धर्म त्यागी)होने के कारण उसकी हत्या करदी जाए,अथवा उसके फिस्क़(दुराचार एवं अनैतिकता)का पक्ष मानने वालों के अनुसार उसे तण्ड के रूप में उसकी हत्या करा दी जाए,क्योंकि अबूबकर रज़ीअल्लाहु अंहु ने ज़कात न देने वालों से युद्ध किया,जो लोग उसकी अनिवार्यता के इंकार कर रहे थे उनसे भी और जो उसकी अनिवार्यता को मानने के बावजूद अदा करने से इंकार कर रहे थे,उनसे भी,नमाज़ छोड़ने वाले की हत्या का कथन शाफेई और विद्वानों के एक समूह का है|**

अध्याय नमाज़ छोड़ने वाले पर लागू होने वाले दीनी एवं दुनयावी आदेशों की व्यख्या

90 "کتاب الصلاۃ وحکم تارکھا" **पृष्ठ संख्या 63,नमाज़ छोड़ने वाले को काफिर मानने वालों की दसवें प्रमाण के पश्चात**

- **नमाज़ छोड़ने वाले के काफिर होने के कारण यह लागू होता है कि जो व्यक्ति नमाज़ छोड़ता हो वह किसी नमाज़ी मुसलमान महिला से विवाह न रचाए,यदि विवाह कर लिया हो तो उसके साथ वैवाहिक जीवन बसर करना उसके लिये मान्य नहीं, उससे संभोग करना उसके लिये अवैध है,क्योंकि वह महिला मुसलमान है और पुरूष काफिर है,अल्लाह का कथन है:**

﴿ فَإِنْ عَلِمْتُمُوهُنَّ مُؤْمِنَاتٍ فَلاَ تَرْجِعُوهُنَّ إِلَى الْكُفَّارِ لاَ هُنَّ حِلٌّ لَّهُمْ وَلاَ هُمْ يَحِلُّونَ لَهُنَّ ﴾

अर्थात:यिद तुम्हें यह ज्ञान हो जाये कि वह ईमान वालियॉ हैं तो उन्हें वापिस न करो काफिरों की ओर न वे औरतें हलाल(वैध)हैं उन के लिये और न वे काफिर हलाल(वैध)हैं उन औरतों के लिये|

- **इसी प्रकार यदि पुरूष नमाज़ पढ़ता हो और पत्नी नमाज़ न पढ़ती हो तो उसके लिये वैध नहीं कि उससे विवाह रचाए और न ही उसके साथ वैवाहिक जीवन बिताए,क्योंकि मुसलमान के लिये यह वैध नहीं कि किसी मुसलमान अथवा किताबी महिला(यहूदी व ईसाई)के अतिरिक्त किसी और से विवाह रचाए,किंतु धर्म त्यागी महिला से विवाह करना उसके लिये मान्य नहीं,** والله المستعان
- **नमाज़ छोड़ने वाले कि लिये वैध नहीं कि मक्का के हुदूदे ह़रम(निश्चित पवित्र स्थान)में प्रवेश करे,जैसा कि अल्लाह का वर्णन है:**

﴿يَاأَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُواْ إِنَّمَا الْمُشْرِكُونَ نَجَسٌ فَلاَ يَقْرَبُواْ الْمَسْجِدَ الْحَرَامَ بَعْدَ عَامِهِمْ هَـذَا﴾

अर्थात:हे ईमान वालो!मुशरिक(मिश्रणवादी)मलीन है,अत: इस वर्ष के पश्चात वह सम्मानित मस्जिद(कॉबा)के समीप भी न आयें|

- **नमाज़ छोड़ने वाले का यदि निधन होजाए तो न उसको स्नान कराया जाए,न उसे कफन पहनाया जाए और न मुसलमानों के कबरिस्तान में उसे दफन किया जाए और न उसके लिये क्षमा की दुआ़ की जाए,क्योंकि स्नान देना,कफन पहनाना और मुसलमानों के कबरिस्तान में दफन करना ऐसे आदेश हैं जो मुसलमानों के साथ खास हैं,अत: जिस व्यक्ति का कोई नजदीकी संबंधि एवं परिजन हो जिसके बार में वह जानता हो कि वह नमाज़ नहीं पढ़ता तो उसके लिये यह मान्य नहीं कि दोखे में डाल कर लोगों को उसकी जनाज़े की नमाज़ पढ़ने पर मजबूर करदे,अल्लाह का कथन है:**

﴿وَلاَ تُصَلِّ عَلَى أَحَدٍ مِّنْهُم مَّاتَ أَبَدًا وَلاَ تَقُمْ عَلَى قَبْرِهِ إِنَّهُمْ كَفَرُواْ بِاللّهِ وَرَسُولِهِ وَمَاتُواْ وَهُمْ فَاسِقُون﴾

अर्थात:(हे नबी!)आप उन में से कोई मर जाये तो उस के नमाज़ कभी न पढ़ें,और न उस की समाधि(कब्र)पर खड़े हों,क्योंकि उन्हों ने अल्लाह और उस के रसूल के साथ कुफ्र किया है,और अवज्ञाकारी रहते हुए मरे हैं|

- **नमाज़ छोड़ने वाले के साथ जो अह़काम विशेष हैं उनमें से यह भी है कि उसका ज़बह़ किया हुआ मवेशी[91] ह़राम है,क्योंकि ज़बह़ करने की शर्तों में से यह भी है कि ज़बह़ करने वाला मुसलमान अथवा किताबी(यहूदी व ईसाई)हो,किंतु धर्म त्यागी और मजूसी आदि का ज़बह़ किया हुआ जानवर ह़लाल नहीं है|**
- **नमाज़ छोड़ने वाला अपने परिजनों का वारिस नहीं हो सकता,क्योंकि नबी सलल्लाहु अलैहि वसल्लम की ह़दीस है:"मुसलमान,काफिर का वारिस नहीं हो सकता और न काफिर,मुसलमान का"|[92]**
- **रही बात नमाज़ छोड़ने वाले की आखिरत के जीवन की तो यह ज्ञात है कि काफिर की मौत जब कुर्फ की स्थिति में हो तो वह हमेशा नरक में रहेगा,जैसा कि अल्लाह ने फरमाया:**

﴿إِنَّ اللَّهَ لَعَنَ الْكَافِرِينَ وَأَعَدَّ لَهُمْ سَعِيرًا* خَالِدِينَ فِيهَا أَبَدًا لاَّ يَجِدُونَ وَلِيًّا وَلاَ نَصِيرًا﴾

अर्थात:अल्लाह ने धिक्कार दिया है काफिरों को और तय्यार कर रखी है उन के लिये दहकती अगिन|वे सदावासी होंगे उसमें,नहीं पाएंगे कोई रक्षक और न कोई सहायक|

---

91 **अर्थात जिस जानवर को वह अपने हाथ से ज़बह़ करे उसका खाना ह़राम है,चाहे उसपर अल्लाह का नाम ले अथवा न ले|**

92 **इस ह़दीस को बोखारी(6764)और मुस्लिम(1614)ने ओसामा बिन ज़ैद रज़ीअल्लाहु अंहुमा से वर्णित किया है,उपरोक्त शब्द मुस्लिम के हैं|**

लाभ:नमाज़ आँख की ठंडक उस समय बनती है जब उस में छ विशेषताएं इकट्ठा हों

इब्नुल क़य्यिम रहिमहुल्लाहु ने उल्लेख किया है कि वह नमाज़ जिससे आँख को ठंडक और हृदय को शांति मिलती है,उसका अर्थ ऐसी नमाज़ है जिसमें छ विशेषताएं इकट्ठा हों:

प्रथम विशेषता:निष्ठा,इसका अर्थ यह है कि नमाज़ के लिये प्रोत्साहित करने वाली चीज यह हो कि बंदा के अंदर अल्लाह के चाह,उसका प्रेम,उसको प्रसन्न रकने की चाहत,उसकी निकटता व प्रेम की तलब और उसके आदेशों का पालन पाया जाए,वह इस प्रकार से कि नमाज़ के लिये प्रोत्साहित करने में किसी प्रकार का कोई दुनयावी उद्देश्य कदापि शामिल न हो,बल्कि उसका उद्देश्य केवल स्वोत्तम ईश्वर की प्रसन्नता की प्राप्ति,उसके प्रेम,उसकी यातना का भय और उसके क्षमा एवं पुण्य की आशा हो|

द्वितीय विशेषता:सत्यता एवं सद्भावना,इसका अर्थ यह है कि अपने हृदय को पूर्णता से अल्लाह के लिये खाली करदे,पूरी शक्ति अल्लाह की ओर ध्यान लगाने में झोंकदे,नमाज़ में हृदय एवं बुद्धि को उपस्थित रखे,आंतरिक एवं बाह्य प्रत्येक प्रकार से उत्तम एवं पूर्ण रूप से नमाज़ पढ़े,क्योंकि नमाज़ के कुछ भाग आंतरिक एवं कुछ बाह्य हैं,अत: देखाई देने वाले आ़माल व गतिविधियां और सुने जाने वाले वचन आदि इसके

आंतरिक भाग हैं,जबकि विनम्रता एवं विनयशीलता,बुद्धि तत्परता,अल्लाह की ओर हृदय को लगाए रखना और पूरे मन के साथ अल्लाह की ओर ध्यान लगाना,इस प्रकार कि उसका हृदय किसी और ओर न जाए,यह नमाज़ की आत्मा के समान है,और गतिविधियां उसके शरीर के समान हैं,यदि नमाज़ आत्मा से खाली होगई तो उस शरीर के जैसे होजएगी जिस में आत्मा न हो|

क्या बंदा को शर्म नहीं आती कि इस प्रकार की आत्मा मुक्त नमाज़ के साथ अपने मालिक का सामना करे?

यही कारण है कि ऐसी नमाज़ को पुराने कपड़े के जैसे लपेट कर उस नमाज़ी के चेहरे पे मार दिया जाएगा,और वह नमाज़ कहेगी:अल्लाह तुझे नाश करे जिस प्रकार तूने मुझे नष्ट कर दिया|

वह नमाज़ जिसका आंतरिक एवं बाह्य उत्तम हो वह शिखर की ओर चढ़ती है और उसमें सूर्य के जैसे प्रकाश होता है,यहां तक कि वह अल्लाह के समक्ष होती है तो अल्लाह उससे प्रसन्न होता और उसे स्वीकार करता है,वह नमाज़ कहती है:अल्लाह तेरी रक्षा करे जिस प्रकार तूने मेरी रक्षा की|

तृतीय विशेषता:आज्ञापालन एवं अनुगमन,इसका मतलब यह है कि नमाज़ी पूरा प्रयास करे कि अपनी नमाज़ नबी सलल्लाहु अलैहि वसल्लम

के अनुगमन में पढ़े,जैसे आप नमाज़ पढ़ते थे,उसी प्रकार पढ़े,लोगों ने नमाज़ में अपनी ओर से जो कमी बढ़ोतरी कर रखी है और जिन कार्यों एवं गतिविधियों का वृद्धि कर रखा है जो कि न नबी सलल्लाहु अलैहि वसल्लम से सिद्ध हैं और न किसी सह़ाबी से,उनसे बचता रहे,उन छूट चाहने वाले लोगों के कथनों पर अंमल न करे जो वोजूब(अनिवार्यता)के निम्नतम चरण पर बस करते हैं जबकि अन्य लोग उनका विरोध करते हैं और उनके निरस्त अह़काम को वाजिब(अनिवार्य)मानते हैं और नबी सलल्लाहु अलैहि वसल्लम की सह़ी ह़दीसें भी उनको बल पहुंचाती हैं,फिर भी छूट चाहने वाले लोग उन सुन्नतों की परवाह नहीं करते और यह कहते हैं कि:(हम अमुक मज़हब के मोक़ल्लिद(अनुयायी)हैं)|इससे वह अल्लाह के समक्ष मुक्ति प्राप्त नहीं कर सकते और न सुन्नत को जानने के बाद उससे मुंह मोड़ने का कोई अनुचित बहाना है,क्योंकि अल्लाह तआ़ला ने केवल रसूल के अनुगमन और आज्ञापलन का आदेश दिया है,उनके अतिरिक्त किसी और के अनुपालन का आदेश नहीं दिया,बल्कि दूसरे का अनुपालन उसी समय किया जाए जब उसका आदेश रसूल के आदेश के अनुसार हो,रसूल सलल्लाहु अलैहि वसल्लम के अतिरिक्त हर किसी का कथन स्वीकार भी किया जा सकता है और छोड़ा भी जा सकता है|

अल्लाह तआ़ला ने अपनी हस्ती की शपथ खाकर फरमाया है कि हम उस समय तक मोमिन नहीं हो सकते जब तक कि समस्त आपस के विवादों

में आप सलल्लाहु अलैहि वसल्लम को न्यायाधीश ने मान लें,आप के निर्णय को मानें और उसको स्वीकार करें,आपके अतिरिक्त किसी और का निर्णय और अनुगमन हमें लाभ नहीं दे सकता और न हमें अल्लाह की यातना से बचा सकता है,और हमारा यह उत्तर[93]उस समय कोई काम नहीं आएगा जब हम क़्यामत के दिन अल्लाह तआ़ला की यह पूकार सुनेंगे: ﴿ مَاذَا أَجَبْتُمُ الْمُرْسَلِينَ﴾ (तुमने पैगंबरों को क्या उत्तर दिया),अल्लाह तआ़ला हम से इस विषय में अवश्य प्रश्न करेगा और हम से उत्तर मांगेगा,अल्लाह का फरमान है:

﴿فَلَنَسْأَلَنَّ الَّذِينَ أُرْسِلَ إِلَيْهِمْ وَلَنَسْأَلَنَّ الْمُرْسَلِينَ﴾

अर्थात:तो हम उन से अवश्य प्रश्न करेंगे जिन के पास रसूलों को भेजा गया तथा रसूलों से भी अवश्य प्रश्न करेंगे|

नबी सलल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया:(मुझे वह़्य की गई है कि तुम्हें मेरे माध्यम से आजमाया जाएगा और मेरे बारे में प्रश्न किया जाएगा)अर्थात क़ब्र में प्रश्न किया जाएगा|[94]

---

93 **अर्थात यह उत्तर कि:(हम अमुक मज़हब के अनुयायी हैं)**

94 **इस ह़दीस को खत्ताबी ने में आयशा रज़ीअल्लाहु अंहा से वर्णित किया है,इसका अनुपूरूण इस प्रकार है:(यदि वह नेक व्यक्ति होगा तो उसे क़ब्र में बैठाया जाएगा और उसे डर नहीं लगेगा)**

अत: जिस व्यक्ति को रसूल सलल्लाहु अलैहि वसल्लम की सुन्नत का ज्ञान हो और किसी मनुष्य के वर्णन के कारण उसे छोड़दे तो(उसे याद रखना चाहिये कि)क़्यामत के दिन वह हिसाब की परिस्थिति से गुजरेगा और अपनी गलती से अवगत होजाएगा|

चौथी विशेषता:इह़सार की विशेषता,अर्थात अवलोकन की विशेषता,जिसका मतलब यह है कि वह इस प्रकार अल्लाह की पूजा करे मानो वह अल्लाह को देख रहा हो,यह विशेषता उस समय उतपन्न होती है जब अल्लाह पर और उसके अस्मा व सिफात(नामों एवं गुणों)पर इस प्रकार पूर्ण ईमान हो कि वह मानो अल्लाह को आकाशों के ऊपर,फर्श पर मुस्तवी(स्थिर) देख रहा हो,जो अपने आदेशों के माध्यम से वार्ता करता है,मखलूक के समस्त मामलों की रणनीति करता है,आदेश उसी के पास से उतरता है और उसी तक पहुंचता है,बंदों के आ़माल और उनके निधन के समय उनकी आत्माएं अल्लाह के पास प्रस्तुत की जाती हैं,वह इन समस्त दृश्यों को अपने हृदय से देख,अल्लाह के अस्मा व सिफात को देखे,जीवित और सबको थामने वाले (परवरदिगार) ,सुनने और देखने वाले (रब) ,प्रभुत्व व नीति वाले(पालनहार)को देखे,जो प्रेम भी करता और नफरत भी करता है,राजी भी होता और गोस्सा भी होता है,जो चाहे करता है और जो चाहे आदेश देता है, वह अपने अ़र्श पर मुस्तवी है,बंदों का न कोई अ़मल उससे छुपा हुआ है,न कोई बात और न उनके आंतरिक स्थिति उससे छुपा है,बल्कि

वह आँखों की खियानत को और सीनों की छुपी बातों को भी खूब जानता है|

इ़हसान एक ऐसी विशेषता है जिस पर समस्त हृदयी आ़माल निर्धारित है,इससे ह़या,मान-सम्मान,भय व प्रेम,तौबा व निकटता,तवक्कुल और अल्लाह तआ़ला के समक्ष विनम्रता अपनाने का भाव उतपन्न होता है,वसवसों और ख्यालों समाप्त होते हैं,और हृदय व बुद्धि और सोच विचार अल्लाह से जुड़ते हैं|

बंदा को अल्लाह की निकटता उतना ही प्राप्त होता है जितना वह इ़हसान को अपनाता है,उसे के अनुसार नमाज़ के श्रेणी निश्चिय होते हैं,यहां तक कि दो लोगों की नमाज़ के बीच आकाश व पृथ्वी का अंतर होता है,जबकि दोनों के क़्याम व रुकू व सुजूद एक जैसे होते हैं|

पांचवी विशेषता:आभारी होने की विशेषता,अर्थात वह गवाही दे कि समस्त कृपा एवं उपकार अल्लाह तआ़ला की ओर से हैं,अल्लाह ने ही उसे इस स्थान पर लाखड़ा किया है,उसे इस योग्य बनाया,उसे यह तौफीक़ दी कि उसका हृदय और उसका शरीर अल्लाह की पूजा में लग सके,यदि अल्लाह तआ़ला न होता तो यह सब संभव न था,जैसा कि सह़ाबा नबी

सलल्लाहु अलैहि वसल्लम के सामने प्रशंसा करते हुए फरमाया करते थे:

والله لـو لا الله مـا اهـتـديـنـا ولا تصـــــدقـنـا ولا صـــــلـيـنـا

अर्थात:अल्लाह की क़सम□! यदि अल्लाह न होता तो हमें हिदायत न मिलती और न हम दान करपाते और न नमाज़ पढ़ सकते|

अल्लाह का कथन है:

﴿يَمُنُّونَ عَلَيْكَ أَنْ أَسْلَمُوا قُل لاَّ تَمُنُّوا عَلَيَّ إِسْلاَمَكُم بَلِ اللَّهُ يَمُنُّ عَلَيْكُمْ أَنْ هَدَاكُمْ لِلإِيمَانِ إِن كُنتُمْ صَادِقِين﴾

अर्थात:वे उपकार जता रहे हैं आप के ऊपर कि वह इस्लाम लाये हैं|आप कह दें कि उपकार न जाताओ मुझ पर अपने इस्लाम का|बल्कि अल्लाह का उपकार है तुम पर कि उस ने राह दिखायी है तुम्हें ईमान की,यदि तुम सच्चे हो|

अल्लाह पाक ने ही मुसलमान को मुसलमान और नमाज़ी को नमाज़ी बनाया,जैसा कि ख़लील अलैहिस्सलाम ने फरमाया:

﴿رَبَّنَا وَاجْعَلْنَا مُسْلِمَيْنِ لَكَ وَمِن ذُرِّيَّتِنَا أُمَّةً مُّسْلِمَةً لَّكَ ﴾

अर्थात:हे हमारे पालनहार!हम दोनों को अपना आज्ञाकारी बना!तथा हमारी संतान से एक ऐसा समुदाय बनादे जो तेरा आज्ञाकारी हो|

अधिक फरमाया: ﴿رَبِّ اجْعَلْنِي مُقِيمَ الصَّلَاةِ وَمِن ذُرِّيَّتِي ﴾

अर्थात:हमारे पालनहार!मुझे नमाज़ की स्थापना करने वाला बना दे,तथा मरी संतान को|

इ़हसान(कृपा)केवल और केवल अल्लाह का है कि उसने अपने बंदह को प्रार्थना की तौफीक़ प्रदान की,बल्कि यह उसके महानतम उपकारों में से है,अल्लाह तआ़ला का फरमान है: ﴿وَمَا بِكُم مِّن نِّعْمَةٍ فَمِنَ اللَّهِ﴾

अर्थात:तुम्हें जो भी सुख-सुविध प्राप्त है वह अल्लाह ही की ओर से है|

अल्लाह ने और फरमाया: ﴿وَلَكِنَّ اللَّهَ حَبَّبَ إِلَيْكُمُ الإِيمَانَ وَزَيَّنَهُ فِي قُلُوبِكُمْ وَكَرَّهَ إِلَيْكُمُ الْكُفْرَ وَالْفُسُوقَ وَالْعِصْيَانَ أُوْلَئِكَ هُمُ الرَّاشِدُونَ﴾

अर्थात:परन्तु अल्लाह ने प्रिय बना दिया है तुम्हारे लिये ईमान को तथा सुशोभित कर दिया है उसे तुम्हारे दिलों में और अप्रिय बना दिया है तुम्हारे लिये कुफ्र तथा उल्लंघन और अवैज्ञ को,और यही लोग संमार्ग पर हैं|

यह एक महानतम गुण है जो कि बंदा के लिये अति लाभदायक है,बंदा जितना तौ़हीद(एकेश्वरवाद)पर स्थिर रहता है उतना ही उसके अंदर यह गुण भी उतपन्न होता है|

इस गुण एवं विशेषता का लाभ यह है कि वह ह्रदय के बीच और अपने अ़मल पर स्वयं प्रशंसा का शिकार होने के बीच रोकावट होती है,क्योंकि बंदा जब गवाही देता है कि अल्लाह तआ़ला ही उसका परोपकारक है,उसी ने उसे तौफीक़ और निर्देश दिया है,यह गवाही उसे इस बात से उदासीन करदेगी कि वह अ़मल को देख कर स्वयं प्रशंसा का शिकार हो अथवा उसके माध्यम से लोगों पर प्रभुत्व जताए,अत: यह गुण उसके ह्रदय में

उत्थान उतपन्न करती है,अत: वह स्वयं प्रशंसा का शिकार नहीं होता,उसकी जबान को सही मार्ग दिखाती है,अत:वह न उपकार जताता और न उस पर गर्व करता है,स्वीकृत एवं उच्च अ़मल का यही चिन्ह है|

इसका लाभ यह भी है कि वह प्रशंसा को उसके पात्र(पालनहार)की ओर संबंधित करता है,अत: स्वयं की प्रशंसा में लगा नहीं रहता,बल्कि अल्लाह की प्रशंसा करता है,इसी प्रकार समस्त उपकारों एवं आशीर्वादों को अल्लाह का कृपा मानता है,समस्त उपकार एवं दया को अल्लाह की ओर संबंधित करता है और यह स्वीकार करता है कि समस्त अच्छाई व भलाई अल्लाह ही के हाथ में है,यह तौ़हीद(एकेश्वरवाद)की पूर्णता का प्रमाण है,तौ़हीद के स्थान पे वह उसी समय स्थिर रह सकता है जब उसे असका ज्ञान होता और वह उसकी गवाही देता है,जब वह इस से अवगत होता है और इस स्थान पर जम जाता है तो यह उसकी विशेषता बन जाती है,और जब यह उसके हृदय की विशेषता बन जाती है तो उसके अंदर अल्लाह का प्रेम व स्नेह,उससे मिलने का आकांक्षा,उसके ज़िक्र और उसकी आज्ञा का ऐसा भाव उतपन्न होता है कि उसका तुलना दुनया के किसी भी महानतम उपकार से नहीं किया जा सकता|

मनुषय का हृदय यदि उससे वंचित हो और उसके लिये वहां तक पहुंचने का मार्ग बंद हो तो उसके जीवन में कोई भलाई नहीं है,बल्कि उसकी स्थिति ऐसी है जैसा कि अल्लाह तआ़ला ने फरमाया:

﴿ذَرْهُمْ يَأْكُلُوا وَيَتَمَتَّعُوا وَيُلْهِهِمُ الأَمَلُ فَسَوْفَ يَعْلَمُونَ﴾

अर्थात:(हे नबी!)आप उन्हें छोड़ दें,वह खाते,तथा आनन्द लेते रहें,और उन्हें आशा निश्चेत किये रहे,फिर शीघ्र ही वह जान लेंगे|

छठी विशेषता:स्वयं को काहिल स्वीकारने की विशेषता,बंदा अल्लाह के आदेश को पूरा करने के लिये चाहे कठोर परिश्रम क्यों न करले और अपनी पूरी शक्ति क्यों न झोंकदे,वह स्वेद काहिल ही रहेगा,अल्लाह तआ़ला का अधिकार उससे अधिक महान है,जिसका तकाजा है कि उसकी आज्ञाकारी और बंदगी और सेवा उससे कहीं बढ़ कर किया जाए,अल्लाह तआ़ला की महानता व महिमा का तकाजा है कि उपयुक्त एवं शोभनीय रूप में उसकी प्रार्थना की जाए|

यदि राजाओं के सेवक एवं नौकर उनकी सेवा करते हुए आदर व सम्मान,श्रद्धा व प्रतिष्ठा,लज्जा,भय और सद्भावना व विनयशीलता का पालन करते हैं,वह इस प्रकार से कि अपने हृदय और शारीरिक अंगों समेत उनकी ओर ध्यान लगाए रखते हैं,तो राजाओं का राजा और आकाश व धरती का मालिक इस बात का अधिक पात्र है कि उसके साथ इस प्रकार से बल्कि इससे कहीं बढ़ कर आदर व सम्मान किया जाए|

बंदा जब अपने अंदर यह देखता है कि उसने पूरी तरह अपने परवरदिगार की बंदगी का हक बल्कि उसके हक का थोड़ा सा भी अदा नहीं किया,तो

उसे अपनी काहिली का ज्ञात होजाता है,फिर उसके पास इसके अतिरिक्त कोई और उपाय नहीं रहता कि वह इस्तिग़फार करे,अपनी काहिली और कमी पर और इस बात पर क्षमा मांगे कि उसने अल्लाह का हक उस प्रकार से पूरा नहीं किया जिस प्रकार से करना चाहिये था,वह बंदा भक्ति का हक पूरा न करने पर क्षमा का जितना दरिद्र होता है,वह आवश्यक्ता इससे कहीं बढ़ कर होती है कि वह इस पर पूण्य की मांग करे,यदि वह उसका पूरा हक अदा कर भी दे तो भक्ति के रूप में उसपर यह अनिवार्य भी था,क्योंकि दास का अ़मल और अपने स्वामी का सेवा उसके दास और सेवक होने के कारण उस पर अनिवार्य है,यदि वह अपने स्वामी से अपने अ़मल और सेवा के बदले वेतन मांगे तो लोग उसे मूर्ख और बेवकूफ कहेंगे,जबकि वह उसका वास्तविक दास है भी नहीं,बल्कि वह सास्तव में प्रत्येक रूप से अल्लाह का दास है,अत: उसका अ़मल और सेवा करना उसके दास होने के कारण उसपर अनिवार्य है,यदि अल्लाह तआ़ला उसे उस पर पूण्य देता है तो यह केवल उसकी कृपा है,न कि बंदे का अधिकार,इसको सामने रखें तो हमारे लिये नबी सलल्लाहु अलैहि वसल्लम की इस ह़दीस को समझना आसान हो जाता है:"तुम में से किसी व्यक्ति को उसका अ़मल मुक्ति नहीं दिला सकेगा|"सह़ाबा ने

पूछा:अल्लाह के रसूल!आपको भी नहीं?आपने फरमाया:मुझे भी नहीं मगर यह कि मुझे अल्लाह तआ़ला अपने कृपा के साये में लेले"|[95]

इस विशेषता के चार सिद्धांत हैं:सही नीयत,उच्च साहस,साथ ही इच्छा एवं आकांक्षा और डर व भय|

ये चार चीजें इस विशेषता के सिद्धांत हैं,बंदा के ईमान व परिस्थितियां और आंतरिक एवं बाह्य कमी है,उसका कारण इन चार सिद्धांतों की कमी अथवा इनमेंसे कुछ की कमी होती है|

बुद्धिमान व्यक्ति को इन चारों चीजों पर विचार करना चाहिए,उन्हें अपना जीवन शैली में परिवर्तण लाना चाहिए,उनपर ही अपने ज्ञान,आ़माल एवं कथनों और परिस्थितियों को आधारित करना चाहिए,जो लोग भी सालेहिय्यत(धार्मिकता)के उच्च स्थान पर पहुंचे,वह इनके आधार पर ही पहुंचे,और जो इससे पीछे रह गए वह इन चीजों के लुप्त होने के कारण पीछे रह गए|

---

95 इस ह़दीस को बोखारी(6463)और मुस्लिम(2816)ने अबूहोरैरा रज़ीअल्लाहु अंहु से उपरोक्त शब्दों ही के जैसा रिवायत किया है|

والله أعلم، والله المستعان وعليه التكلان، وإليه الرغبة، وهوالمســـئول بأن يوفقنا وســـائر إخواننا من أهل السنة لتحقيقها علما وعملا، إنه ولي ذلك والمان به، وهو حسبنا ونعم الوكيل[96]

निष्कर्ष

नमाज़ रिज़्क़ लाने वाली,स्वास्थ की रक्षक,कठिनाइयों को दूर करने वाली और हृदय को सशक्त करने वाली है,तथा चेहरे को आलोकित करती और आत्मा को आनंदित करती है,आलस को दूर करके सारे अंगों में हलचल उतपन्न करती है,शक्ति को बढ़ाती है और हृदय को खोलती है,तथा आत्मा के लिए खुराक है,हृदय को आलोकित करती है,आशीर्वादों की रक्षक,यातना को दूर करने वाली,बरकत की प्राप्ति का माध्यम,शैतान से दूर करने वाली और रहमान से निकट करने वाली है|

96 "رسالة ابن القيم إلى أحد إخوانه" **पृष्ठ संख्या:34-46, थोड़े हेर-फेर के साथ,प्राक्कथन:शैख बकर अबूज़ैद रहिमहुल्लाहु,शोध:अब्दुल्लाह बिन मोहम्मद अलमोदीफर**

संक्षेप में यह कि शारीर और हृदय के स्वास्थ और दोनों की शक्ति की रक्षा में और उनसे बुरा तत्व को दूर करने में नमाज़ का बड़ा प्रभाव है,दो व्यक्ति जब किसी संकट व आपदा,अथवा आजमाइश का शिकार होते हैं,तो उनमें से जो नमाज़ी होता है उसका संकट व आपदा दूसरे की तुलना में कम और उसका परिणाम अधिक सुरक्षित होता है|

दुनियावी कठिनाइयों को दूर करने में नमाज़ का एक अद्भुत प्रभाव हे,विशेष रूप से उस समय जब कि उसके समस्त आंतरिक एवं बाह्य हकों को पूरा किया जाए,दुनिया व आखिरत की कठिनाइयों को दूर करने और दोनों संसार की अच्छाई व भलाई प्राप्त करने का कोई विधि नमाज़ के जैसा कारगर नहीं है|[97]

आप रहिमहुल्लाहु अधिक फरमाते हैं:इसका भेद यह है कि नमाज़ अल्लाह तआ़ला के साथ संबंध पैदा करती है और अल्लाह तआ़ला के साथ बंदे का जितना अधिक संबंध होगा उतना ही उसपे भलाई के दरवाजे खुलते जाएंगे और कठिनाई के दरवाजें बंद होते जाएंगे और उसके लिये रब की ओर से

---

97 **लेखक-अल्लाह उनको क्षमा प्रदान करे-का कहना है:यही कारण है कि:नबी सलल्लाहु अलैहि वसल्लम को जब कोई गम होता तो आज नमाज़ पढ़ने लगते,इस ह़दीस को अबूदाउूद**(1319)**ने ह़ोज़ैफा बिन अलयमान नज़ीअल्लाहु अंहु से वर्णित किया है और अल्बानी ने इसे ह़सन कहा है|**

तौफीक,शांति और स्वास्थ,धन,सुकून व उपकार व प्रसन्नता के कारण उतपन्न होने लगते हैं और यह सारे उपकार उसके पैर चूमने लगते हैं|[98]

98 "زادالمعاد" (4/332)